

नया नियम इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र,

सत्र 23: रोमियों, भाग 1

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा न्यू टेस्टामेंट इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 23 रोमियों भाग एक है।

ए. त्वरित समीक्षा: 1 एमजे, 2एमजे, कारावास [00:00-4:22]

ठीक है, आपका फिर से स्वागत है। हम अपने पिछले कक्षा सत्रों में प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ रहे थे और हमने देखा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का दूसरा भाग पॉल पर केंद्रित है, सबसे पहले दमिश्क की सड़क पर उसके उद्धार के अनुभव पर, जहाँ वह यीशु से मिला था। फिर वह बरनबास और जॉन मार्क के साथ अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर गया, उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा, जिसमें वह मुख्य रूप से एशिया जाना चाहता था, लेकिन भगवान उसे त्रोआस तक ले जाता है जहाँ वह ल्यूक को उठाता है। वह लुस्त्रा में टिमोथी को भी उठाता है जहाँ उसे पत्थर मारकर मृत समझकर छोड़ दिया गया था। इसलिए टिमोथी और ल्यूक उसके साथ त्रोआस से फिलिप्पी जाते हैं। फिर वह ग्रीस के उत्तरी भाग में मैसेडोनिया में रहता है और मूल रूप से फिलिप्पी, थिस्सलुनीका और बेरिया जाता है। फिर वह अकेले एथेंस आता है और फिर कोरिंथ शहर में बस जाता है। दूसरी मिशनरी यात्रा पर, मैं इसे सरल बनाता हूँ, लेकिन दूसरी मिशनरी यात्रा पर वह कोरिंथ में दो साल बिताता है, और फिर वह वापस एंटीओक चला जाता है।

तीसरी मिशनरी यात्रा में वह सीधे इफिसुस की ओर बढ़ता है, जो एशिया प्रांत में है, एशिया देश नहीं, बल्कि एशिया प्रांत। तीसरी मिशनरी यात्रा में वह इफिसुस में तीन साल बिताता है।

इसलिए दूसरी मिशनरी यात्रा में वह दो साल कुरिन्थ में और तीसरी मिशनरी यात्रा में इफिसुस में तीन साल बिताता है। वहाँ वह विभिन्न लोगों से मिलता है और लिखना शुरू करता है। उसके बाद तीसरी मिशनरी यात्रा में वह कुरिन्थ जाता है, और मैसेडोनियन कुरिन्थ में पैसे जुटाने की कोशिश करता है क्योंकि यरूशलेम में अकाल पड़ा हुआ है। इसलिए वह उनके लिए पैसे जुटाता है। वह अकाल के पैसे लाने के लिए यरूशलेम वापस जाता है। जब वह यरूशलेम में होता है, तो

उसे पकड़ लिया जाता है और उसे कैसरिया के तट पर दो साल के लिए जेल में डाल दिया जाता है। अब जब वह दो साल जेल में है, तो लूका वहाँ है, शायद मैं सुझाव दे रहा हूँ कि वह मरियम और प्रेरितों से बात करे और लूका के सुसमाचार के लिए शोध करे। फिर पॉल, वे फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा से पहले उसे आजमाना चाहते थे, ये तीन लोग हैं जिनके सामने वह जाता है। फेलिक्स रिश्तत चाहता है। पॉल ऐसा नहीं करने वाला है।

फेलिक्स ने दृश्य को छोड़ दिया। फ़ेस्टस ने कमान संभाली और फ़ेस्टस यहूदियों की प्रशंसा चाहता था। इसलिए उसने कहा, "ठीक है, मैं पॉल को वापस यरूशलेम भेजूँगा क्योंकि यहूदियों को यह पसंद आएगा।" पॉल जानता था कि अगर वह वापस यरूशलेम जाता है, तो वे उसे रास्ते में पकड़ लेंगे और यरूशलेम जाते समय मार डालेंगे। इसलिए पॉल दीवार से पीठ सटाकर कहता है, "मैं कैसर से अपील करता हूँ।" इसलिए फ़ेस्टस के पास अब कैसर से अपील करने का समय है क्योंकि वह एक रोमन नागरिक है, उसे उसे रोम भेजना होगा।

लेकिन फेस्तुस के पास आरोप बहुत अच्छे से नहीं हैं। वह रोम को किसके साथ भेजने जा रहा है? वह कौन से आरोप पेश करने जा रहा है? वह इस अपराधी को रोम क्यों भेज रहा है। तो यहीं से अग्रिप्पा की बात आती है और ऐसा लगता है कि अग्रिप्पा यहूदी रीति-रिवाजों और अधिकारों और चीज़ों को जानता है। इसलिए फेस्तुस और अग्रिप्पा एक तरह से गठबंधन बनाते हैं। वे पॉल का साक्षात्कार लेते हैं। पॉल अग्रिप्पा को गवाही देना शुरू करता है। अग्रिप्पा कहता है "लगभग राजी हो गया, लेकिन हार गया।" यह अग्रिप्पा के बारे में प्रसिद्ध गीतों और ईसाई धर्म में से एक है। अग्रिप्पा कहता है "पॉल, तुम बहुत होशियार हो, सीखना तुम्हें पागल कर रहा है।" तो, और फिर पॉल को रोम भेज दिया जाता है।

अब रोम की अपनी यात्रा और प्रेरितों के काम के अध्याय 27 में, आप जानते हैं, वह ल्यूक और कुछ अन्य लोगों के साथ जहाज़ की यात्रा पर जाता है, और माल्टा के द्वीप पर जहाज़ का मलबा गिर जाता है। पॉल वहाँ से निकलता है, एक साँप को उठाता है, जो उसे काटता है, और फिर वह रोम पहुँच जाता है। जब वह रोम में होता है, तो उसे लगभग दो साल के लिए पहली बार रोमन कारावास होता है। हम अब 62 ई. या उसके आसपास की बात कर रहे हैं।

फिर उसे दो साल के लिए रिहा कर दिया जाता है और वह दूसरी बार रोमन कारावास में चला जाता है, और फिर वहाँ उसका सिर कलम कर दिया जाता है। वह एक रोमन नागरिक था, इसलिए वे उसे सूली पर नहीं चढ़ा सकते थे। वह एक रोमन नागरिक था, इसलिए उसका सिर कलम कर दिया गया। दूसरी ओर, पीटर, उससे कुछ साल पहले रोम में मर जाएगा। रोम में पीटर और पॉल एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और पीटर को उल्टा सूली पर लटकाकर मरना होगा क्योंकि उसने कहा था कि वह यीशु की तरह मरने के योग्य नहीं था।

बी. पौलुस द्वारा पत्र लिखने का इतिहास [4:22-10:51]

तो यह एक तरह से बस एक त्वरित समीक्षा है। और इसलिए पॉल, फोकस, ल्यूक और प्रेरितों की किताबें सबसे उत्कृष्ट थियोफोलिस को लिखी गई हैं, मेरा मानना है कि पॉल को उसके मुकदमे में मदद करने के लिए। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह सिर्फ पॉल के पत्रों को देखना है और कैसे वे कालानुक्रमिक रूप से उसकी पहली, दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के साथ मेल खाते हैं और फिर उसकी पहली और दूसरी रोमन कारावास को देखते हैं।

तो पहली मिशनरी यात्रा के बाद, कई लोगों को लगता है कि पॉल ने अपनी पहली एमजे पर इसे पहली मिशनरी यात्रा कहा है। यह यरूशलेम परिषद से पहले की बात है। यही एकमात्र तारीख थी जिसे मैंने आप लोगों को जानने के लिए प्रेरित किया। यरूशलेम परिषद लगभग 50 ई.पू. की है। इसलिए इसे याद रखना आसान है। पहली मिशनरी यात्रा 50 ई.पू. में यरूशलेम परिषद से कुछ साल पहले हुई थी। तो यह, हम 48 ई.पू. के आसपास की बात कर रहे हैं।

इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि इस बात पर बहस चल रही है, खास तौर पर गलातियों के मामले में, इस पर बहुत बहस चल रही है, लेकिन मोटे तौर पर वह पहली मिशनरी यात्रा के बाद वापस आता है, यरूशलेम जाता है, और फिर वह यहूदियों और यहूदियों तथा अन्यजातियों के साथ संबंधों के बारे में गलातियों के चर्चों को एक पत्र लिखता है, जिसे 50 ई. में यरूशलेम परिषद में सुलझाया गया था। इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि यह पॉल द्वारा लिखा गया सबसे पहला पत्र है, और यह उसकी पहली मिशनरी यात्रा के ठीक बाद लिखा गया होगा। यरूशलेम परिषद 50 ई. में इस बात पर होती है कि अन्यजातियों को खतना करवाना ज़रूरी नहीं है या नहीं। कई

अन्यजातियों के लिए इस पर बहुत खुशी होती है।

फिर दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, पॉल कुरिन्थ से प्रथम और द्वितीय थिस्सलुनीकियों को लिखने जा रहा है। अब उसने कहा, दूसरी मिशनरी यात्रा, कुरिन्थ में दो साल। तो वह कुरिन्थ से लिखने जा रहा है जहाँ वह दो साल के लिए बसने जा रहा है। वह थिस्सलुनीके तक दो पत्र लिखने जा रहा है। वे मैसेडोनिया में हैं और वह भेज रहा है, मूल रूप से टाइटस वहाँ जा रहा है और वापस आ रहा है। तो वह प्रथम और द्वितीय थिस्सलुनीकियों को लिखता है।

कुछ लोग, जिनका मैं बहुत सम्मान करता हूँ, कहते हैं कि पहले। दूसरा थिस्सलुनीकियों पहला पत्र है और वे गलातियों को बाद में रखते हैं। लेकिन यह दूसरी मिशनरी यात्रा है। तो हम दूसरे थिस्सलुनीकियों के लिए दूसरी मिशनरी यात्रा पर हैं।

फिर तीसरी मिशनरी यात्रा पर, पॉल इफिसुस में तीन साल के लिए बस जाता है। जब वह इफिसुस में रहता है, तो याद रखें कि हमारे पास जो नक्शा था, उसमें इफिसुस, कुरिन्थ से लगभग सीधे एजियन सागर के पार है। इसलिए वहाँ बहुत सारा व्यापार होता है। पॉल इफिसुस से प्रथम कुरिन्थियों का पत्र लिखता है।

इफिसुस से काम पूरा करने के बाद वह मैसेडोनिया की यात्रा करता है और जब वह मैसेडोनिया में होता है, तो वह दूसरे कुरिन्थियों को लिखता है और मुख्य रूप से कुरिन्थियों को बताता है, "अरे, मैं नीचे आ रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम गरीब लोगों को कुछ पैसे दान करो क्योंकि यरूशलेम में अकाल पड़ा है।" इसलिए हम मूल रूप से कुरिन्थियों को चेतावनी देते हैं और तैयार करते हैं कि भगवान खुशी से देने वाले को प्यार करते हैं, जो आपको चाहिए, आप लोग कुरिन्थ में अमीर हैं। आपको यरूशलेम में हमारे गरीब भाइयों और बहनों की मदद करने के लिए इसमें से कुछ योगदान देना चाहिए जो इस अकाल से गुजर रहे हैं। इसलिए पॉल, इफिसुस में तीन साल, वह पहले कुरिन्थियों को लिखता है और वह मैसेडोनिया तक यात्रा करता है। वह कुरिन्थ आने वाला है और वह लिखता है, दूसरे कुरिन्थियों को भेजता है।

एक और कोरिंथियन भी है जो खो गया है। वे इसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं। ऐसा है, लेकिन जाहिर है कि उसने कोरिंथियन को एक तीसरा पत्र लिखा था जो हमारे पास नहीं है। अब,

जब पॉल तीसरी मिशनरी यात्रा में पैसे लेने के लिए कोरिंथ आता है ताकि वह यरूशलेम वापस जा सके और वहाँ के गरीब लोगों की मदद कर सके।

जब वह कुरिन्थ में था, तो उसने रोमियों की पुस्तक लिखी। आज हम रोमियों पर नज़र डालेंगे। और वह मूल रूप से रोमियों को लिखता है। रोमियों का संबंध पश्चिम से है और उसे एहसास होता है कि उसे वापस पूर्व की ओर, यरुशलम जाना है। तो यहाँ क्या होता है कि वह मूल रूप से रोमियों की पुस्तक लिखता है। उसने चर्च की स्थापना नहीं की, जो कि एक तरह से दिलचस्प बात है। इसलिए वह रोमियों को लिखता है, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। लेकिन पहले मुझे यरुशलम वापस जाना है और यरुशलम में गरीब लोगों के साथ इस दान प्रक्रिया में मदद करनी है। तो यहीं पर रोमियों की पुस्तक कुरिन्थ से रोम तक लिखी गई और फिर फीबे के हाथों से ली गई। संभवतः प्रिस्किल्ला और अक्विला उस समय रोम में थे। संभवतः वे वापस चले गए थे।

और फिर तीसरी मिशनरी यात्रा के बाद, पॉल की पहली रोमन कैद के दौरान, हम 60 62 63 ई. के बारे में बात कर रहे हैं, जो कि पहली रोमन कैद के लिए है। माल्टा द्वीप पर जहाज़ के डूबने के बाद, वह रोम पहुँच जाता है। उसे घर में नज़रबंद कर दिया जाता है। लोग उससे मिल सकते हैं। यह भयानक नहीं है और तब से पहली रोमन कैद के दौरान, वह जेल पत्र लिखता है। जेल पत्र हमें गॉर्डन कॉलेज में मिले, जेल पत्र के विशेषज्ञ। डॉ. डैन डार्को ने जेल पत्र पर 30 व्याख्यान दिए हैं। वह इफिसियों और सामान्य रूप से जेल पत्र के विशेषज्ञ हैं। यदि आप रुचि रखते हैं, तो यह सब ऑनलाइन मुफ्त है। आप YouTube पर जा सकते हैं और बस डॉ. डैन डार्को और जेल पत्र दर्ज कर सकते हैं और आप वहाँ उनके 30 व्याख्यान देख पाएँगे। लेकिन पॉल ने ये तब लिखे जब वह पहली रोमन कैद में था। यह भयानक नहीं है। उसके घर मेहमान और अन्य चीज़ें आ सकती हैं। वह इफिसियों को लिखता है। वह कुलुस्सियों को लिखता है। वह फिलिपियों को लिखता है और वह फिलेमोन को लिखता है। तो ये महान जेल पत्र हैं। इफिसियों, कुलुस्सियों,... मैं इसे पेक या पी पीईसी कहता हूँ। ठीक है। फिलिपियों, फिलेमोन, इफिसियों और कुलुस्सियों को पहले रोमन कारावास से।

फिर उसे थोड़े समय के लिए छोड़ दिया जाता है। और जब वह पहली रोमन कैद और

दूसरी रोमन कैद के बीच में आज़ाद होता है, तो वह आज़ादी का समय होता है। वह पहला तीमुथियुस लिखता है और वह तीतुस को भी लिखता है। उन्हें पादरी पत्र कहा जाता है क्योंकि वे चर्चों को नहीं लिखे गए हैं। इनमें से कई अन्य चर्चों को लिखे गए हैं। इन्हें पादरी पत्र कहा जाता है। तो यह पॉल है जो प्रभु में अपने बेटे तीमुथियुस को लिख रहा है। और इसलिए, तीतुस के पास उसके साथ एक साथी, यात्रा है। इन्हें पादरी पत्र कहा जाता है क्योंकि वे व्यक्तियों को लिखे गए हैं।

फिर अंत में दूसरा रोमन कारावास। इस बार, संभवतः 67, 68 के आसपास है। इन सभी बातों पर बहस है, लेकिन 67, 68 में पॉल ने अपना आखिरी पत्र लिखा, जो दूसरा तीमुथियुस है। दूसरे तीमुथियुस में, यह वास्तव में स्पष्ट है कि पॉल जानता है कि वह मरने वाला है। और इसलिए वह जानता है कि वह, यह उसकी आखिरी वसीयत और वसीयतनामा है। वह तीमुथियुस को लिख रहा है और उसके पास मूल रूप से कुछ टिप्पणियाँ हैं, आप जानते हैं, जॉन मार्क को लाओ और, और चर्मपत्र लाओ। इसलिए पॉल ने दूसरे रोमन कारावास में अपने अंतिम अनुरोध किए। तो यह कालानुक्रमिक रूप से है, हमने प्रेरितों और प्रेरितों की पुस्तक को देखा है, इन विभिन्न - पॉलिन पत्रों के लिए पृष्ठभूमि कालक्रम निर्धारित करता है।

सी. पॉलिन पत्रों को विषय के आधार पर समूहीकृत करना [10:51-13:29]

अब मैं इन्हें विषयगत रूप से समूहीकृत करना चाहता हूँ और इसलिए मैं इन्हें लेना चाहता हूँ, हमने इन्हें कालानुक्रमिक रूप से देखा और मैं यहाँ कुछ धार्मिक शब्दों का उपयोग करना चाहता हूँ कि इन्हें धार्मिक रूप से कैसे समूहीकृत किया जाए। और इसलिए इन्हें एस्केटोलॉजिकल एपिस्टल्स कहा जाता है। और यह पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों का एस्केटोलॉजी से संबंधित मामला होगा। एस्केटोलॉजी या एस्केटोलॉजिकल एपिस्टल्स क्या है? वे अंत समय के बारे में हैं। इसलिए जब मैं एस्केटोलॉजी कहता हूँ, तो शायद नए नियम की सबसे बड़ी किताब रहस्योद्घाटन की किताब है। यदि आप पुराने नियम में हैं, तो दानिय्येल, एक महान, आप जानते हैं, एस्केटोलॉजिकल किताबें जो अंत समय, दानिय्येल और रहस्योद्घाटन के बारे में बात करती हैं। पॉल ने प्रभु के वापस आने और उस अंत समय और उस तरह की चीज़ों के बारे में पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों लिखा। इन्हें एस्केटोलॉजिकल कहा जाता है।

सोटेरिओलॉजिकल पत्र ये पत्र सोटेरिओलॉजी के बारे में हैं। ग्रीक में सोटेरिओलॉजी या सोटर का मतलब मोक्ष या उद्धारकर्ता होता है। और इसलिए ये मोक्ष के बारे में और मोक्ष की प्रक्रिया कैसे काम करती है, इसके बारे में लिखे गए हैं। तो आपके पास गलातियों, पहले और दूसरे कुरिन्थियों और रोमियों हैं। अब, अगर आप किताबों के विवरण को समझते हैं, तो आपको पता चलता है कि यह इन श्रेणियों में फिट नहीं बैठता है। कुछ ओवरलैप है और वे बिल्कुल फिट नहीं बैठते हैं। लेकिन आम तौर पर, अगर आप इसे एक सिंहावलोकन तरीके से देखते हैं, तो गलातियों, पहले और दूसरे कुरिन्थियों और रोमियों में सोटर हैं जो मोक्ष के बारे में बात करते हैं, खासकर रोमियों और गलातियों में। खासकर कुरिन्थियों में चर्च की समस्याओं के बारे में बहुत कुछ बताया गया है। दूसरा कुरिन्थियों, जैसा कि हमने कहा, यरूशलेम में गरीब लोगों के लिए धन जुटा रहा है।

अब मसीह संबंधी पत्र, ये वे पत्र हैं जो मसीह के साथ चलते हैं। वे मसीह पर केन्द्रित हैं। ये कुलुस्सियों और इफिसियों, फिलिप्पियों और फिलेमोन हैं। और इसलिए इन्हें मसीह संबंधी पत्र कहा जाता है क्योंकि वे मसीह के व्यक्तित्व और कार्य पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। और फिर यहाँ, मुझे लगता है कि ये अंत में चर्च संबंधी पत्र हैं। हम चर्च संबंधी कहते हैं, हम चर्च के बारे में बात कर रहे हैं। और इसलिए चर्च संबंधी पत्र प्रथम, द्वितीय तीमुथियुस और तीतुस हैं। जैसा कि हमने पहले कहा, वे पादरी संबंधी पत्र थे। इसलिए वे व्यक्तियों को लिखे गए थे कि उन्हें चर्च की देखभाल कैसे करनी चाहिए और उन्हें कैसे नेतृत्व करना चाहिए, और उन्हें कैसे नेता होना चाहिए, उन्हें चर्च में किस तरह के नेता होने चाहिए, और उन्हें चर्च के नेतृत्व के साथ कैसे काम करना चाहिए। और ये प्रथम और द्वितीय तीमुथियुस और तीतुस हैं। तो ये चर्च के लिए तैयार चर्च संबंधी पत्र हैं। और यह पॉल के पत्रों की एक तरह की सामयिक व्यवस्था है।

डी. चर्च इतिहास और रोमियों [13:29-19:21]

अब मैं विषय बदलना चाहता हूँ और मैं अब रोमनों की पुस्तक में कूदना चाहता हूँ। और यह रोमियों को पॉल का पत्र है और वहाँ से शुरू करके रोमियों की पुस्तक पर चर्चा करना चाहता हूँ - रोमियों की पुस्तक का पहला भाग। ऐसा करने के लिए, मैं चर्च के इतिहास की टिप्पणियों के साथ रोमियों की पुस्तक के महत्व पर चर्चा करना चाहता हूँ। रोमियों की पुस्तक एक शानदार पुस्तक है

और यह है। मुझे कुछ प्रमुख धर्मशास्त्रियों को पढ़ने दें जिन्होंने अपने धर्मशास्त्र का एक बड़ा हिस्सा रोमियों की पुस्तक पर आधारित किया है। मैं संत ऑगस्टीन से शुरू करूँगा, संत ऑगस्टीन लगभग 386 ई. में वापस आए थे। ऑगस्टीन एक प्लेबॉय की तरह थे या मुझे नहीं पता कि आप इसे कैसे कहते हैं। उन्हें पार्टी करना पसंद था। चलिए बस इतना ही कहते हैं। तो ऑगस्टीन एक तरह से पार्टी करने वाले व्यक्ति थे। उनकी माँ, मोनिका उनके लिए प्रार्थना कर रही थीं कि वे प्रभु को जानें। जो हुआ वह संत ऑगस्टीन के बयानों में है, जिसे गॉर्डन कॉलेज के कई छात्रों ने अपने पहले वर्ष के सेमिनार में पढ़ा। ऑगस्टीन के बयान में मूल रूप से उन्होंने रोमनों को पढ़ा और रोमियों 13, रोमियों 13:13 और 14 को पढ़ने के बाद उनका धर्मांतरण हुआ। इसमें कहा गया है, उन्होंने ये छंद पढ़े, "हम दिन के समय की तरह शालीनता से व्यवहार करें, और न कि व्यभिचार और नशे में, न ही यौन अनैतिकता और व्यभिचार में, न ही कलह और ईर्ष्या में। बल्कि, प्रभु यीशु मसीह के साथ खुद को तैयार करें और पापी स्वभाव की इच्छाओं को संतुष्ट करने के बारे में न सोचें।" ऑगस्टीन वास्तव में पापी स्वभाव और व्यभिचार और इस तरह की चीजों में लिप्त थे। जब उन्होंने इसे पढ़ा, तो सबसे पहले, इसने उनके दिल को छेद दिया और वे एक ईसाई बन गए और सभी समय के सबसे महान धर्मशास्त्रियों में से एक, संत ऑगस्टीन। ऑगस्टीन के बयान कुछ ऐसा है जिसे आप अपनी पढ़ने की सूची में रखना चाहेंगे। तो यह ऑगस्टीन और उस पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव था।

अब ऑगस्टीन के बाद, आप जानते हैं, चर्च एक हज़ार साल, एक हज़ार साल से ज़्यादा समय तक चला। मार्टिन लूथर नाम का एक आदमी था, या जैसा कि मेरे एक दोस्त डेव मैथ्यूसन कहते हैं, मार्टिन लूथर और मार्टिन लूथर, जब वह रोमन की किताब पढ़ रहे थे, तो बहुत दिलचस्प थे। वह लिखते हैं, यह मार्टिन लूथर है, प्रोटेस्टेंट, प्रोटेस्टेंट सुधार का प्रमुख। तो यह वह आदमी है जिसने 1517, 1522 के आसपास रोमन की इस किताब के साथ प्रोटेस्टेंट सुधार की शुरुआत की। लूथर कहते हैं, "यह पत्र वास्तव में नए नियम का मुख्य भाग है और सबसे शुद्ध सुसमाचार है और न केवल इसके योग्य है, बल्कि हर ईसाई को इसे शब्दशः जानना चाहिए।" तो मेरे छात्रों, आपको इसे शब्दशः जानना चाहिए। लूथर ने यही कहा। आपको रोमन की किताब को शब्दशः याद रखना चाहिए, "लेकिन आत्मा की दैनिक रोटि के रूप में हर दिन इसके साथ खुद को व्यस्त रखना

चाहिए। इसे कभी भी बहुत अधिक नहीं पढ़ा या विचार नहीं किया जा सकता है, और जितना अधिक इसे पढ़ा जाएगा, यह उतना ही अधिक मूल्यवान हो जाएगा और इसका स्वाद उतना ही बेहतर होगा।" और इसलिए वे कहते हैं, मूल रूप से रोमियों की पुस्तक उनके लिए बहुत बड़ी थी। अब यह मार्टिन लूथर था। फिर, जैसा कि वे कहते हैं, सुसमाचार के शुद्धतम सार के संदर्भ में रोमियों की पुस्तक उनके लिए बहुत बड़ी थी।

अब, जो बात वाकई दिलचस्प है वह यह है कि लूथर ने रोमन की किताब में अपनी टिप्पणी के लिए एक प्रस्तावना लिखी है। तो लूथर ने रोमन पर यह टिप्पणी लिखी है। वह इसकी प्रस्तावना लिखता है, और जॉन वेस्टली नाम का एक आदमी है। फिर यह जॉन वेस्ले है। हम अब 1740 के दशक की बात कर रहे हैं। जॉन वेस्ले इंग्लैंड से जॉर्जिया और अमेरिका की यात्रा पर थे, लेकिन ज्यादातर इंग्लैंड में, एपिस्कोपल चर्च के साथ। वेस्ले ने रोमन के लिए लूथर के काम की प्रस्तावना पढ़ी, और फिर वेस्ले कहते हैं, यही वह समय था जब जॉन वेस्ले ने रोमन के लिए लूथर की प्रस्तावना पढ़ने के बाद प्रभु को जाना। वह कहते हैं, "उनका दिल अजीब तरह से गर्म हो गया था।" और यह जॉन वेस्ले के लिए एक महत्वपूर्ण शब्द है कि "उनका दिल अजीब तरह से गर्म हो गया था।" और यही वह समय था जब वह लूथर की रोमन की किताब की प्रस्तावना पढ़ने के परिणामस्वरूप ईसाई बन गए। वह जॉन वेस्ले हैं। आज हम वेस्लीयन चर्च, नाज़रीन चर्च और कई अन्य चर्चों को जानते हैं, जिनकी शुरुआत वेस्ली और उनके अनुयायियों ने की थी।

अंत में, 20वीं सदी में एक व्यक्ति था जिसे 20वीं सदी का सबसे महान धर्मशास्त्री कहा जाता था। अब, लोग उससे असहमत हैं। वह नव-रूढ़िवाद के लिए एक तरह से मानक वाहक है। दूसरे शब्दों में, चर्च उदार हो गया था और शास्त्र को नकार रहा था, शास्त्र को नकार रहा था, और शास्त्र को नकार रहा था। बार्थ, मूल रूप से 20वीं सदी में कार्ल बार्ट नामक इस व्यक्ति ने एक नई रूढ़िवादिता शुरू की, जहाँ वह शास्त्रों की ओर वापस गया और शास्त्रों पर वापस आया। उसने कहा कि आइए तिथि और लेखकत्व के सवालों और इस तरह की सभी चीजों पर बहस करना बंद करें जो शास्त्रों को नष्ट कर देती हैं। लेकिन आइए शास्त्र को देखें, यह हमें क्या कह रहा है। और मूल रूप से, बार्थ सबसे महान धर्मशास्त्रियों में से एक थे, जिन्होंने कई धर्मशास्त्र पुस्तकें लिखीं जो

एक पूरी शेल्फ भर देती हैं। रोमियों पर उनकी शानदार टिप्पणी, रोमियों की पुस्तक में बहुत लंबी टिप्पणी, 20वीं सदी में कार्ल बार्ट, संभवतः 20वीं सदी के सबसे महान धर्मशास्त्री। लोग उनसे असहमत हैं। आप जानते हैं कि धर्मशास्त्री कैसे होते हैं, कुछ लोग आपसे सहमत होते हैं, कुछ लोग आपसे असहमत होते हैं। इसलिए बार्थ के साथ भी, पक्ष और विपक्ष दोनों हैं, लेकिन, अधिकांश लोग उन्हें, और प्रोटेस्टेंट दृष्टिकोण से, 20वीं सदी के सबसे महान धर्मशास्त्री मानते हैं। रोमन उनके पूरे काम की असली कुंजी थे और इस नव-रूढ़िवादी आंदोलन को वापस लाना, 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उदारवाद से दूर पेंडुलम को वापस लाना।

तो बस रोमन्स कहने का मतलब है कि रोमन्स ऑगस्टीन, लूथर, वेस्ले, बार्थ और कई अन्य लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण पुस्तक थी। इसलिए रोमन्स एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

ई. प्रेरित पौलुस की जीवनी [19:21-26:37]

अब रोमियों में जाने से पहले, मैं प्रेरित पौलुस को देखना चाहता हूँ। हमने रोमियों की पुस्तक या प्रेरितों के काम की पुस्तक में उनके बारे में कुछ जीवनी संबंधी रेखाचित्र बनाए हैं, जब हम पहली, दूसरी, तीसरी मिशनरी यात्रा और फिर उनके दो रोमन कारावासों से गुज़र रहे थे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम पौलुस को टार्सस में उनके जन्म के संदर्भ में देखें और मुझे लगता है कि हमने पहले मानचित्र में बताया था। यदि भूमध्य सागर आता है और यह तुर्की है और यह सीरिया में नीचे की ओर जा रहा है, ठीक उस कोने में जहाँ सीरिया और तुर्की मिलते हैं, तो यह तुर्की में थोड़ा सा है जहाँ टार्सस है। यहीं पर पौलुस का जन्म हुआ था। यह उनके लिए एक बड़ी बात है क्योंकि उनका जन्म टार्सस में हुआ था, इसका मतलब है कि वे स्वतंत्र पैदा हुए हैं। उन्होंने इसके बारे में एक गीत भी बनाया "बॉर्न फ्री" - यह एक मज़ाक था, मुझे खेद है। लेकिन वैसे भी, पौलुस कहता है कि उसका जन्म टार्सस में हुआ था, इसलिए वह एक रोमन नागरिक के रूप में पैदा हुआ था। वह बाद में साथियों से मिलने जा रहा है और वे कहेंगे, "मुझे अपने रोमन नागरिक होने के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।" पॉल कहता है, "मैं स्वतंत्र पैदा हुआ, मैं तरसुस में पैदा हुआ।" इसलिए, वह एक रोमन नागरिक था। उसके पास कुछ अधिकार थे जिसके लिए वह कैसर से अपील कर सकता था। वे उसे बिना किसी आरोप और अन्य चीज़ों के नहीं मार सकते थे, हालाँकि उन्होंने वैसे भी ऐसा

किया। इसलिए तरसुस, वह तरसुस में पैदा हुआ था और यह तथ्य कि वह वहाँ पैदा हुआ था, उसके लिए बहुत बड़ी बात है।

वह तीन संस्कृतियों को एक साथ जोड़ता है और मैं पॉल को इन तीन संस्कृतियों के दृष्टिकोण से देखना चाहता हूँ कि वह किस तरह से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, सबसे पहले, पॉल का नाम मूल रूप से शाऊल था। पॉल का नाम मूल रूप से शाऊल था। जब मैं शाऊल कहता हूँ तो आप उसकी यहूदी जड़ों के बारे में सोचते हैं। शाऊल इस्राएल का पहला राजा था। शाऊल भी बेंजामिन के गोत्र से था। पॉल भी बेंजामिन के गोत्र से ही होगा। इसलिए मेरा अनुमान है कि शाऊल, जो पॉल बन गया, का नाम शाऊल रखा गया था, संभवतः बेंजामिन के गोत्र के राजा शाऊल के नाम पर। वे दोनों भी बेंजामिन के गोत्र से हैं और दोनों का नाम भी यही था।

तो पॉल, फिर मैं कुछ बातें पढ़ूंगा कि वह खुद को यहूदी कैसे बताता है। वह फिलिप्पियों 3:5 में यह कहता है, वह कहता है, "यदि कोई और सोचता है कि उसके पास शरीर पर भरोसा करने के कारण हैं, तो मेरे पास और भी हैं। मेरा आठवें दिन खतना किया गया था।" अब यदि आप एक यहूदी पुरुष बच्चे हैं, तो यही करने की आवश्यकता है। और उसने कहा कि यह किया गया था। उसका "आठवें दिन खतना किया गया था, इस्राएल के लोगों में से, बिन्यामीन के गोत्र का, व्यवस्था के संबंध में इब्रानियों का इब्रानी, एक फरीसी।" अब समस्या यह है कि जब आप फरीसी सुनते हैं, तो आप सोचते हैं कि फरीसी, पाखंडी। उस समय लोगों ने इसे इस तरह नहीं सुना होगा। उस समय लोगों ने फरीसी सुना होगा फरीसी अपनी धर्मपरायणता और अपनी गरीबी के लिए जाने जाते थे। और फरीसी सद्गुणियों की तरह अमीर नहीं थे, जो बहुत हेलेनिस्टिक थे। फरीसी लोगों द्वारा धार्मिक नेताओं के रूप में सम्मान किए जाते थे जो धर्मपरायण थे।

और इसलिए पौलुस कहता है, "मैं एक फरीसी था। जहाँ तक जोश की बात है," उसने कहा, मैं एक फरीसी के रूप में इतना जोशीला था कि मैंने चर्च को सताया। "जहाँ तक कानूनी धार्मिकता की बात है, मैं निर्दोष था, लेकिन जो कुछ भी मेरे लाभ के लिए था, मैं अब मसीह के लिए हानि समझता हूँ।" इसलिए वह इस तथ्य का उल्लेख करता है कि वह इब्रानियों का इब्रानी कैसे था।

प्रेरितों के काम अध्याय 22:3 में लिखा है कि उसने कहा, "मैं एक यहूदी हूँ, जो तरसुस और

किलिकिया में पैदा हुआ, लेकिन इस शहर, यरूशलेम में गमलीएल के अधीन पला-बढ़ा। मुझे हमारे पूर्वजों के कानून में पूरी तरह से प्रशिक्षित किया गया था।" तो गमलीएल उसका शिक्षक था। अब, अगर कोई यहूदी धर्म से परिचित है, तो मूल रूप से सभी समय के चार महान रब्बी हैं। एक है हिलेल, महान रब्बी, हिलेल, अकीबा, शम्माई, और, और फिर गमलीएल। तो ये लोग, पॉल ने शायद आइंस्टीन के अधीन अध्ययन किया। पॉल ने कहा, मैंने आइंस्टीन के अधीन अध्ययन किया, और अचानक ऐसा लगा, वाह, वह आदमी है। और इसलिए, आपके पास यहाँ गमलीएल है। पॉल गमलीएल के अधीन अध्ययन करने में सक्षम होने के लिए, गमलीएल के छात्र के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए बहुत ही प्रतिभाशाली रहा होगा।

और इसलिए पॉल, ठीक है, मैं अब उसके रोमन पहलुओं पर जाना चाहता हूँ। तो वह यहूदियों का यहूदी है, और फिर वह राजनीतिक रूप से भी रोमन है। यह प्रेरितों के काम 22:25 के अध्याय 22 में आता है, और इसके बाद यह कहा गया है, "जब उन्होंने उसे कोड़े मारने के लिए फैलाया।" तो पॉल को यरूशलेम में पकड़ लिया गया। वह पैसे लेकर आया, और उसे यरूशलेम में गरीब लोगों को दे दिया। फिर मंदिर में दंगा हुआ और वहाँ, उन्होंने सोचा कि पॉल ने दंगा शुरू किया है। इसलिए वे उसे फैला रहे हैं। वे उसे कोड़े मारने जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने उसे कोड़े मारने के लिए फैलाया, और "पॉल ने वहाँ खड़े सेंचुरियन से कहा, क्या आपके लिए एक रोमन नागरिक को कोड़े मारना कानूनी है जो कभी भी दोषी नहीं पाया गया है?" और जवाब है, नहीं, मैं एक रोमन नागरिक हूँ। मुझे कोड़े मारने से पहले आपको पहले मुझे आजमाना होगा। और वह सेंचुरियन से अधिकारपूर्ण तरीके से कहता है, जो एक ऐसा व्यक्ति है जो सौ से ज़्यादा सैनिकों का है। "जब सेंचुरियन ने यह सुना, तो वह सेनापति के पास गया।" तो सेंचुरियन ने जवाब दिया। वह डर गया क्योंकि पॉल एक रोमन नागरिक था। वह अपने सेनापतियों के पास गया। तो अब सौ से अधिक सेंचुरियन अपने सेनापति के पास गए और इसकी सूचना दी। "आप क्या करने जा रहे हैं? उसने पूछा, यह आदमी एक रोमन नागरिक है," तब सेनापति, सेंचुरियन नहीं, बल्कि सेनापति सीधे पॉल के पास गया क्योंकि वह जानता था कि वह यहाँ मुश्किल में पड़ सकता था। सेनापति पॉल के पास गया और उसने पूछा, "मुझे बताओ, क्या तुम एक रोमन नागरिक हो? हाँ मैं हूँ। उसने उत्तर दिया।

फिर सेनापति ने कहा, मुझे भुगतान करना पड़ा।" यह अब सेनापति है जो सेंचुरियन के ऊपर है। उसने कहा, "मुझे अपनी नागरिकता के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, लेकिन मैं एक नागरिक के रूप में पैदा हुआ था। पॉल ने उत्तर दिया। इसलिए उन्होंने उसे नहीं पीटा क्योंकि वह एक रोमन नागरिक था। आप देख सकते हैं कि रोमन-पन और राजनीतिक रूप से उसकी मृत्यु में भी काम आया, उसे एक यहूदी के रूप में सूली पर चढ़ाए जाने के बजाय एक रोमन नागरिक के रूप में सिर कलम किया गया।

अंत में, मैं उनकी ग्रीक भाषा पर नज़र डालना चाहता हूँ। सांस्कृतिक रूप से, पॉल सांस्कृतिक रूप से एक ग्रीक, धार्मिक रूप से एक यहूदी, राजनीतिक रूप से या रोमन और सांस्कृतिक रूप से ग्रीक है। और इसलिए आप पॉल को अधिनियमों और अन्य स्थानों में उद्धृत करते हुए पाते हैं, आप उसे मींडर, एक ग्रीक कवि, एपिमिनिडेस और एरेटस ग्रीक कवि को उद्धृत करते हुए पाते हैं। तो मूल रूप से वह उन्हें जोड़ता है क्योंकि जब वह मार्स हिल में था, आपको याद है एथेंस में और वह चारों ओर घूमता है और इन सभी मूर्तियों को देखता है और वह कहता है, "मैं अब आपको अज्ञात ईश्वर के बारे में बताने जा रहा हूँ, आपके पास अज्ञात ईश्वर के लिए एक वेदी है। मैं आपको अज्ञात ईश्वर के बारे में बताने जा रहा हूँ। वह कहता है, "उसमें, हम जीते हैं और चलते हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं जैसा कि आपके अपने कुछ कवियों ने कहा है," और वह एरेटस, एपिमिनिडेस, एथेंस के इन ग्रीक दार्शनिकों को उद्धृत करता है। इसलिए पॉल न केवल बाइबल में, न केवल यहूदी धर्म में, बल्कि वह ग्रीक कवियों और अन्य चीजों को भी जानता है और उनसे सीखता है, जिन्हें वह अपने पत्रों में अपेक्षाकृत अर्ध-अक्सर उद्धृत करता है।

यह एक दिलचस्प बात है, खासकर गॉर्डन कॉलेज जैसे उदार कला महाविद्यालय में। हमें अपने ईसाई उपसंस्कृति के बाहर अन्य लोगों को पढ़ने के बारे में सोचने की ज़रूरत है और पॉल अच्छी तरह से पढ़ा हुआ था और फिर सुसमाचार और अन्य चीजों को फैलाने के लिए संपर्क बिंदु के रूप में इसका उपयोग करता है।

F. सेंट पॉल की विशेषताएँ [26:37-35:27]

अब ये प्रेरित पौलुस की विशेषताओं की एक तरह की सूची है। और मैं बस इन विशेषताओं

को खींचना चाहता हूँ और फिर एक श्लोक पढ़ना चाहता हूँ जो इसे प्रमाणित करता है। तो पौलुस की मुख्य विशेषताएँ। पौलुस नैतिक रूप से ईमानदार था। पौलुस के पास एक मजबूत नैतिक दिशा-निर्देश था। और इसलिए यह प्रेरितों के काम 23:1 है। इसमें कहा गया है, पौलुस सीधे महासभा की ओर देखता है। महासभा एक न्यायिक निकाय था जो यहूदिया पर था। इस न्यायिक निकाय में मुख्य रूप से 70 लोग थे जो यहूदी लोगों के लिए निर्णय लेते थे। यह एक तरह से, यह एक सर्वोच्च न्यायालय की तरह था जिसमें कुछ के बजाय केवल 70 लोग थे। तो पौलुस सीधे महासभा की ओर देखता है और कहता है, "मेरे भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के प्रति और पूरे विवेक के साथ अपना कर्तव्य पूरा किया है।" यह एक बहुत बड़ा कथन है। पौलुस ने कहा, मैंने आज तक पूरे विवेक के साथ महासभा की ओर देखते हुए अपना कर्तव्य पूरा किया है। तो यह एक प्रभावशाली बात है। पौलुस एक नैतिक रूप से ईमानदार व्यक्ति है।

वह एक बुद्धिजीवी है। जाहिर है, वह एक बुद्धिजीवी है। आप पत्र और अन्य चीजों को पढ़ते हैं, आप उसके तर्कों को देखते हैं जो उसने रोमियों की पुस्तक में विकसित किए हैं। वह बहुत तार्किक है। उसके पास बहुत विश्लेषणात्मक दिमाग है और वह बहुत स्पष्ट है। यहाँ पीटर की एक टिप्पणी है। अब पीटर बड़े स्तंभों में से एक है, जैसा कि पॉल ने शुरुआती चर्च में कहा था। पीटर पॉल के बारे में एक टिप्पणी करने जा रहा है और मैं बस यह देखना चाहता हूँ कि पीटर इसे कैसे उठाता है। पीटर एक मछुआरा था। पीटर एक ऐसा व्यक्ति था जो यीशु को जानता था और यीशु के बहुत करीब था। लेकिन यहाँ 2 पतरस 3:16 में पीटर क्या है, यह वही है जिस पर पतरस चिंतन कर रहा है। पॉल कहता है, "याद रखो कि हमारे प्रभु के धैर्य का अर्थ उद्धार है। जैसा कि हमारे प्रिय भाई पॉल ने भी उस बुद्धि के साथ तुम्हें लिखा है जो उसे परमेश्वर ने दी थी। वह अपने सभी पत्रों में इसी तरह लिखता है।" तो 2 पतरस 3:16 में पीटर को कई पत्रों का पता है जो पॉल ने पहले ही लिखे थे और वे पहले से ही पीटर के लिए आधिकारिक थे। और वह कहता है, अरे, मैं पहले से ही, मैं उनके बारे में जानता हूँ। वह अपने सभी पत्रों में इसी तरह लिखता है और पतरस ने इसे बहुवचन बना दिया है कि वह पौलुस द्वारा लिखे गए कई पत्रों से अवगत है। "इन विषयों के बारे में उनमें बोलते हुए।" अब इसे देखें "उसके पत्रों में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझना कठिन है, जिन्हें अज्ञानी

और अस्थिर लोग दूसरे शास्त्रों की तरह तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं।" इसलिए वह पौलुस के पत्रों को रख रहा है, वह कह रहा है कि इन बातों को समझना बहुत कठिन है। और फिर वह, और वह कहता है, "जैसा कि वे दूसरे शास्त्रों को अपने विनाश के लिए करते हैं।" इसलिए पौलुस एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। इसे पतरस ने स्वीकार किया।

पॉल में इच्छाशक्ति भी बहुत थी। यह भी एक बात है। ऐसा नहीं था कि पॉल बौद्धिक नहीं था, वह स्पष्टवादी था, वह एक अच्छा वक्ता था और उसके पास एक मजबूत नैतिक दिशा थी, लेकिन उसके निर्णयों में एक ताकत थी। और यहाँ, यहाँ एक दिलचस्प अंश है जहाँ पॉल खुद का बचाव करता है। वह आमतौर पर ऐसा करना पसंद नहीं करता है, लेकिन 2 कुरिन्थियों 11:23 और उसके बाद, वह खुद का बचाव करना शुरू करता है। वह एक तरह से व्यंग्यात्मक, थका हुआ तरीका अपनाता है। वह कहता है, "क्या वे मसीह के सेवक हैं।" वह कहता है, "मैं इस तरह की बात करने के लिए पागल हो गया हूँ।" और फिर वह आगे बढ़ने वाला है। वह कहता है, मैं अधिक हूँ, क्या वे मसीह के सेवक हैं? मैं इस तरह की बात करने के लिए पागल हो गया हूँ। अगर मसीह के सेवक हैं, "मैं अधिक हूँ, मैंने बहुत अधिक मेहनत की है। मैं अधिक बार जेल गया हूँ।" अब वह किस बारे में शेखी बघारने वाला है? वह जेल में होने के बारे में शेखी बघारता है। अपने माता-पिता के सामने जेल में होने के बारे में शेखी बघारने की कोशिश करें। "मैं कई बार जेल गया हूँ, मुझे कई बार कोड़े मारे गए हैं, बार-बार मौत के मुंह में जाना पड़ा है। पाँच बार मुझे यहूदियों से 40 कोड़े कम मिले।" उन्होंने हमेशा एक कोड़ा कम कर दिया, क्योंकि वे उस व्यक्ति को मारना नहीं चाहते थे। और इसलिए अगर उन्होंने 39 कोड़े मारे, तो वे कह सकते थे कि वे दयालु थे और उन्होंने उन्हें नहीं मारा और ऐसी ही अन्य बातें। लेकिन "पाँच बार मुझे यहूदियों से 40 कोड़े कम मिले। तीन बार मुझे डंडों से पीटा गया। एक बार मुझे पत्थर मारे गए। तीन बार मेरा जहाज़ डूब गया।" तो हमें माल्टा के गलियारे में इस जहाज़ के डूबने का एक्ट्स 27 में रिकॉर्ड मिला है। वह कहता है, "मेरा जहाज़ तीन बार डूब गया। मैंने एक रात और एक दिन खुले समुद्र में बिताया।" और आप कल्पना कर सकते हैं कि जब आप समुद्र में तैर रहे हों तो यह कितना भयानक होता है। कौन जानता है कि आप बच पाएँगे या नहीं। तो इस तरह से पौलुस डींग मारता है और अपनी दृढ़ता, अपनी दृढ़ता,

अपनी इच्छाशक्ति दिखाता है कि वह बस मसीह के सुसमाचार का प्रचार करता रहा।

यह मुझे एक ऐसे व्यक्ति की याद दिलाता है जिसने हाल ही में प्रेरितों के काम की पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखी है। इस व्यक्ति का नाम डॉ. क्रेग कीनर है। मैंने एस्बरी सेमिनरी में उसका वीडियो बनाया और डॉ. कीनर को बहुत अच्छी तरह से जाना और जाना कि वह ईश्वर का कितना प्यारा आदमी है। वह मूल रूप से नास्तिक था और ईसाई बन गया। जब वह ईसाई बना, तो वह सुसमाचार को लेकर इतना उत्साहित था कि वह मूल रूप से फिलाडेल्फिया चला गया, वह उस समय फिलाडेल्फिया में था और उसने फिलाडेल्फिया में सड़क के कोनों पर प्रचार करना शुरू कर दिया। और जो हुआ वह यह था कि डॉ. कीनर को कई बार पीटा गया, सिर्फ एक बार नहीं, कई बार। एक व्यक्ति ने उसे धमकाया, कहा, "अगर तुम यहाँ वापस आए, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।" इस तरह की बात, आप देखिए कि सुसमाचार के लिए यह दृढ़ता है कि इसे कोई नहीं रोक सकता। यह अजेय है।

पॉल दयालु है। वह यहाँ यहूदियों द्वारा पीटे जाने का उल्लेख करता है। मेरा मतलब है, पाँच बार कोड़े मारे गए। यह, वास्तव में, मेरा मतलब है, उसकी पीठ कीमा की तरह रही होगी। रोमियों 9:3 और उसके बाद यह कहा गया है, यहूदियों के प्रति पॉल की प्रतिक्रिया क्या है? वह कहता है, "मेरे दिल में बहुत दुःख और निरंतर पीड़ा है क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मैं अपने भाइयों के लिए शापित हो जाऊँ और मसीह से अलग हो जाऊँ। जो मेरी अपनी जाति के हैं।" यह यहाँ उसका एक बड़ा कथन है। "मैं खुद, मैं चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि मैं अपने भाइयों के लिए मसीह से अलग हो जाऊँ, जो मेरी अपनी जाति के हैं।" इसलिए जबकि यहूदियों ने पॉल को पीटा था, पॉल को पत्थर मारकर मार डाला था, उन्होंने सोचा, पॉल में अभी भी बहुत दया है और उसकी प्रतिक्रियाएँ हैं। यह यहूदियों के प्रति क्रोधित और कटु और कटु होने के बजाय एक सुंदर प्रतिक्रिया है। पॉल दयालु है।

फिर अंत में, और यह एक तरह से मज़ेदार है। "पॉल और थेक्ला के कार्य" नामक कार्य के लिए एक छद्मलेख है। एक छद्मलेख कार्य है। यह शास्त्र का हिस्सा नहीं है। कोई भी इसे प्रामाणिक नहीं मानता, लेकिन इसका एक दिलचस्प वर्णन है। यह एक प्रारंभिक दस्तावेज़ है, लेकिन इसमें "पॉल और थेक्ला के कार्य" लिखा है। यहाँ बताया गया है कि यह पॉल का शारीरिक वर्णन कैसे

करता है। अब हमने कहा, हमें शायद यहाँ 2 कुरिन्थियों में थोड़ा संदर्भ डालने की आवश्यकता है। पॉल ने कहा कि उसके शरीर में एक काँटा था और फिर उसने कहा, उसने तीन बार भगवान से प्रार्थना की कि वह इसे दूर कर दे। लेकिन भगवान ने कहा, "मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त है।" भगवान उसके शरीर में काँटा नहीं निकालेंगे। पॉल ने तीन बार प्रार्थना की। भगवान इसे दूर कर दें। फिर भी भगवान ने ऐसा नहीं किया। बहुत से लोग सोचते हैं कि पॉल को संभवतः पथर मारकर और सिर पर चोट मारकर उसकी दृष्टि को नुकसान पहुंचाया गया होगा, क्योंकि एक जगह पर कहा गया था कि तुम लोग मेरे लिए अपनी आंखें निकाल लेते।

तो यह जॉर्ज व्हिटफील्ड की तरह है। अगर आपको जॉर्ज व्हिटफील्ड याद है, तो उसकी एक आँख बाहर थी और उसे डॉक्टर स्किंटम कहा जाता था क्योंकि उसकी एक आँख सीधी आगे की ओर नहीं जाती थी। लोग इसे देखते हैं और कहते हैं, यार, पॉल कहता है कि तुम मेरे लिए अपनी आँखें निकाल लेते। तो उसकी आँखें बह रही हैं या कुछ गड़बड़ है। गलातियों की किताब दो में, वह कहता है, "देखो मैं तुम्हें लिखते समय कितने बड़े अक्षरों का उपयोग करता हूँ।" तो शायद उसे देखने में परेशानी हो रही थी और वह बड़ा लिख रहा था। और उसकी लिखावट अनोखी है क्योंकि वह ठीक से देख नहीं पाता। तो हम यह निश्चित रूप से नहीं जानते, लेकिन बहुत से लोगों ने इसका अनुमान लगाया है।

पॉल और थेक्ला के इस कार्य में कहा गया है, यह कहता है, उसने "पॉल को छोटे कद के व्यक्ति के रूप में आते देखा।" अब हम जानते हैं कि यह शायद सच है क्योंकि आपको याद होगा कि बरनबास को ज़ीउस माना जाता था और पॉल को हेमीज़ माना जाता था क्योंकि वह मुख्य वक्ता था। खैर, ज़ीउस बड़ा होने जा रहा है, और हेमीज़ छोटा होने जा रहा है। जब वे लुस्त्रा में थे, जब उन्हें देवता बनाया गया था, तब लुस्त्रा में पॉल को पथर मारे जाने से पहले। लेकिन, यह कहता है कि वह छोटा था, जो शायद सही है। तो यह पूरी तरह से बेतुका नहीं है। "उसने पॉल को आते देखा, एक छोटे कद का आदमी जिसका सिर गंजा था।" अरे, मुझे यह आदमी पसंद है, "एक गंजा सिर और टेढ़े पैर, शरीर की अच्छी स्थिति और भौंहें आपस में मिली हुई।" तो आपको ये असली मोटी भौंहें और इस तरह की चीजें मिलती हैं। "और नाक, कुछ हद तक झुकी हुई, मित्रता से भरी हुई।" तो

आपको इस तरह का आदमी मिलता है जिसकी नाक टेढ़ी, भौंहें मोटी, छोटी और गंजा होती हैं। और आप कहेंगे, यह प्रेरित पौलुस है - उसका शारीरिक रूप से सबसे पहला वर्णन। इसलिए मुझे लगता है कि वहाँ कुछ शुरुआती बातें दिलचस्प थीं।

मुझे लगता है कि प्रेरित पौलुस में आप देखते हैं कि एक व्यक्ति बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। मुझे पता है कि जब हम पुराने नियम में वापस जाते हैं, तो संख्या की पुस्तक में, हमने मूसा के साथ कहा कि मूसा ने प्रार्थना की और पूरे राष्ट्र को बचा लिया गया। एक व्यक्ति ने बहुत बड़ा बदलाव किया। प्रेरित पौलुस के साथ फिर से, हम देखते हैं कि इन मिशनरी यात्राओं में जाने वाला एक व्यक्ति मूल रूप से यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ दुनिया को रोशन कर रहा है। एक व्यक्ति ने बहुत बड़ा बदलाव किया। यह बहुत बढ़िया है।

रोमियों: यहूदी और गैरयहूदी के मुख्य मुद्दे [35:27-39:00]

अब रोमियों, हमने कहा कि यह कोरिंथ से लिखा गया था जब वह कोरिंथ में था और वह रोम को देख रहा था, वह पश्चिम की ओर देख रहा था और कह रहा था, मैं आप लोगों के पास आना चाहता हूँ, लेकिन वास्तव में मैं स्पेन जाने से पहले आप लोगों के पास आना चाहता हूँ। पॉल वास्तव में स्पेन जाना चाहता था और उसने सोचा, ठीक है, मैं स्पेन जाते समय रोम जाऊँगा। इसलिए उसने उन्हें बताया कि वह कोरिंथ से आ रहा है, संभवतः तीसरी मिशनरी यात्रा पर 57 ई. के आसपास लिखा गया था। तो यह सिर्फ समय या कालानुक्रमिक सेटिंग है। 57 ई. वह समय है जब तिथि काफी अच्छी तरह से स्थापित है। कोरिंथ से तीसरी मिशनरी यात्रा वह जगह है जहाँ पुस्तक लिखी गई है।

लेखक पॉल है। लगभग सभी लोग मानते हैं कि कुछ ऐसी किताबें हैं जिन पर सवाल उठाए जाते हैं। उन्हें गैर-पॉलिन कहा जाता है, संभवतः टिमोथी और टाइटस और इस तरह की किताबें। लेकिन रोमियों में, हर कोई उसे वहाँ स्वीकार करता है। रोमियों 1:11 में पॉल ने मूल रूप से कहा, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। फिर, अध्याय 15 श्लोक 28 में, वह कहता है, मैं तुम्हारे पास रोम में आ रहा हूँ, लेकिन पहले, वह यरूशलेम वापस जाने वाला है और वह रोम आना चाहता है और फिर वह स्पेन जाने वाला है। इसलिए 15:28 में उसने स्पेन का उल्लेख किया। स्पेन उन लोगों के लिए दुनिया के अंत जैसा था। इसलिए पॉल ने इस तरह के निर्देश दिए।

अब यहाँ मुख्य मुद्दा यहूदी और गैर-यहूदी हैं। मुख्य बिंदु या प्रस्ताव क्या है? रोमियों की पुस्तक बहुत ही अलंकारिक रूप से परिष्कृत है। प्रस्ताव आमतौर पर मुख्य कथन होता था जहाँ व्यक्ति कहता था, यही कारण है कि मैं यह पुस्तक लिख रहा हूँ। यह मुख्य बिंदु है। तो आपको पॉल का कथन, उसका प्रस्ताव, उसका मुख्य बिंदु अध्याय एक की आयत 16 से 18 में मिलता है। वह यह कहता है, "मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ क्योंकि यह उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है।" तो वह सुसमाचार के बारे में बात करने जा रहा है और यह "हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो पहले यहूदी के लिए विश्वास करता है। और फिर गैर-यहूदी के लिए।" यहाँ ध्यान दें, यहूदी और गैर-यहूदी एक साथ, वे अभी भी इस पहचान के मुद्दे से जूझ रहे हैं कि यहूदी और गैर-यहूदी एक साथ कैसे फिट होते हैं। "पहले यहूदी के लिए और फिर गैर-यहूदी के लिए, क्योंकि सुसमाचार में परमेश्वर की ओर से धार्मिकता प्रकट की गई है। एक धार्मिकता जो शुरू से लेकर अंत तक विश्वास से है। जैसा कि लिखा है, धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा।" तो मूल रूप से सुसमाचार "धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा" के माध्यम से आ रहा है, हबक्कूक से उद्धृत। वे वास्तव में हबक्कूक 2:4 हैं। यह एक तरह से पुराने नियम का एक अच्छा उद्धरण है जो उन्होंने किया है। लेकिन सुसमाचार, उद्धार और धार्मिकता का सुसमाचार वहाँ आरोपित किया जा रहा है।

इसलिए, वह भी बात करते हैं, और मुझे लगता है कि हमें यहाँ यहूदियों और अन्यजातियों के इस रिश्ते के बारे में उल्लेख करना चाहिए। डॉ. विल्सन ने अपनी पुस्तक, हमारे पिता अब्राहम में इस जैतून के पेड़ का वर्णन किया है, जिसे आप रोमियों के अध्याय 11 और अन्य स्थानों में पाते हैं। जैतून का पेड़ और अन्यजातियों को अब जैतून के पेड़ में कलम किया जा रहा है। जबकि हम जंगली जैतून की शाखाओं की तरह हैं जिन्हें यहूदी धर्म के ठोस तने में कलम किया गया है। तो इस तरह का जैविक संबंध है, यहूदी जैतून का पेड़ हैं, उनमें से कुछ शाखाओं को काट दिया गया था और अन्यजातियों को अब उस जैतून के पेड़ में कलम किया गया है। तो यहूदियों और अन्यजातियों के साथ संबंधों पर वहाँ चर्चा की गई है।

रोमियों को हे. पॉल का अभिवादन [39:00-42:54]

अब रोमियों 16 में, मैं लोगों की एक सूची के माध्यम से चलना चाहता हूँ। अब आपको

इसकी सेटिंग समझनी होगी। अधिकांश अन्य पत्रों में, कुरिन्थियों, गलातियों, फिलिपियों, पॉल लोगों को जानता है क्योंकि उसने वहाँ चर्च की स्थापना की थी। इसलिए पॉल चर्च के लोगों को जानता है और इसलिए वह चर्च में किसी समस्या या चर्च में लोगों की किसी सलाह या किसी प्रशंसा से निपट रहा है। रोमियों की पुस्तक में, पॉल कभी रोम नहीं गया, और आप मिशनरी यात्राओं के बारे में जानते हैं। तो आपको रोमियों की पुस्तक के अंत में अध्याय 16 में क्या मिलता है, वह आगे बढ़ता है और कहता है, इस व्यक्ति को नमस्कार करो, उस व्यक्ति को नमस्कार करो। वह इन सभी लोगों से संपर्क बना रहा है जो कि दिलचस्प है। इस व्यक्ति को नमस्कार करो, उस व्यक्ति को, तुम्हारी माँ सभी को नमस्कार करती है। और इसलिए वह कुछ ऐसे लोगों के बारे में बताता है जो वहाँ पर दिलचस्प हैं जिनका वह अभिवादन करता है।

वह हेरोदियन नामक इस व्यक्ति का अभिवादन करता है, जो शायद हेरोदेस के घराने का सदस्य रहा होगा। राजा हेरोदेस का रोम से संबंध था, हेरोदेस और रोम के बीच, इदुमियन, जिनसे वह पृष्ठभूमि में था। उनके बीच संबंध थे। और इसलिए वह यहाँ हेरोदेस का उल्लेख करता है, संभवतः, किसी तरह से हेरोदेस की वंशावली से। और वह हेरोदेस के घराने की वंशावली से उस व्यक्ति का उल्लेख करता है।

एक और जो वाकई दिलचस्प है। उन्होंने यहाँ एक महिला का जिक्र किया और कहा, इस महिला जूनियस को नमस्कार, जो एक प्रेरित है। अब यह एक प्रेरित है, ग्रीक में अपोस्टेलोस। यह महिला एक प्रेरित है। प्रेरित वह था जिसने पुनरुत्थान के बाद मसीह को देखा। क्या आपको 12 प्रेरित याद हैं? अब यह महिला 12 प्रेरितों के अर्थ में प्रेरित नहीं है, लेकिन वह एक प्रेरित के रूप में भेजी गई है। एक प्रेरित वह है जिसने भेजा। तो यहाँ उन्होंने इस महिला को जूनियस नाम दिया और वह एक स्त्रीलिंग शब्द है। वह एक महिला है और उसे यहाँ प्रेरित कहा गया है। तो यह वाकई दिलचस्प है, मुझे लगता है कि शायद नए नियम में यह एकमात्र ऐसा समय है जहाँ एक महिला को प्रेरित कहा गया है। और प्रेरित शब्द का इस्तेमाल 12 में से किसी एक के लिए नहीं किया जा रहा है। हम उनके नाम जानते हैं, साइमन, पीटर, जेम्स और जॉन, उस तरह की चीज़ें। 12 तक पहुँचने के लिए मथायस को इसमें जोड़ा गया। लेकिन 12 एक अलग समूह था। लेकिन इस महिला को यहाँ

प्रेरित कहा गया है। बहुत ही रोचक।

फोबे वह व्यक्ति है, यहाँ नीचे, फोबे, वह एक नौकर है जो वास्तव में पत्र ले जा रही है। जाहिर है कि वह वही है जिसे पॉल ने रोमियों को पत्र दिया था। वह वही है जो इसे रोम ले गई। पॉल कहते हैं, उसे स्वीकार करो, फोबे, क्योंकि वह पत्र ले जा रही है।

अब यह व्यक्ति है टेरटियस। यह व्यक्ति कौन है? यह व्यक्ति वास्तव में काफी दिलचस्प है। इसे अमानुएन्सिस कहा जाता है। अब, अमानुएन्सिस क्या होता है। आज हम शायद इसे सचिव कहेंगे। यह वह व्यक्ति है जिसने वास्तव में रोमियों की पुस्तक लिखी है। वह वास्तव में पुस्तक का लेखक है। तो मूल रूप से वह यह टिप्पणी लिखता है, जैसे ही वह लिख रहा है, पॉल बोल रहा है और जैसे ही पॉल बोल रहा है, टेरटियस इसे लिख रहा है। यहीं से रोमियों की पुस्तक आती है, पॉल ने इसे बोला। टेरटियस ने इसे लिखा। तो टेरटियस ने कहा, "मैं टेरटियस" यह अध्याय 16:22 है, "मैं, टेरटियस, जिसने यह पत्र लिखा है, प्रभु में तुम्हें नमस्कार करता हूँ।" तो जाहिर है कि यह एक आस्तिक है, टेरटियस एक आस्तिक था जो पॉल के लिए उसका पत्र लिख रहा है। फिर से, हमने कहा कि पॉल की लिखावट खराब थी, संभवतः उसकी आँखें खराब थीं। तो टेरटियस ने वास्तव में इसे लिखा और यह एक मानक अभ्यास था कि आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो लिखने और पत्र लिखने तथा चीजों को उनके उचित रूप में लिखने में प्रशिक्षित हो। हम आज भी ऐसा करते हैं और विभिन्न चीजें करते हैं। तो, टेरटियस जो इमानुएन्सिस था। फिर हमारे पास रोमियों की पुस्तक में है, "न तो यहूदी और न ही गैर-यहूदी, न तो पुरुष और न ही महिला, न ही बंधुआ और न ही स्वतंत्र।" और इसलिए हमारे पास कुछ दिलचस्प चीजें करने वाली महिलाएं हैं। यहाँ अन्य चीजें भी हैं।

एच. रोमन और हमार्टियोलॉजी (पाप) [42:54-58:30]

पॉल, और मैं बस इसका उल्लेख करना चाहता हूँ। रोमियों 12:1-2 में यह एक बहुत बड़ी बात है, पॉल बलिदान प्रणाली लेता है और लोगों को जीवित बलिदान के रूप में व्यक्तिगत रूप से शामिल करता है। और इसलिए वह यह कहता है और वह बलिदान प्रणाली लेता है और इसे कुछ ऐसा रूप देता है जो व्यक्तिगत रूप से शक्तिशाली है। फिर से, हम अब बलिदान नहीं करते हैं, लेकिन पॉल उस बलिदान शब्दावली का उपयोग करता है। वह कहता है, "इसलिए, मैं तुमसे आग्रह

करता हूँ, भाइयों और बहनों, परमेश्वर की दया को देखते हुए, अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में, पवित्र और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अर्पित करो। यह आपकी आराधना का आध्यात्मिक कार्य है।" आप परमेश्वर की आराधना कैसे करते हैं? आप "अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में, पवित्र और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए परमेश्वर को अर्पित करते हैं। यह आपकी आराधना का आध्यात्मिक कार्य है और इस संसार के स्वरूप के अनुरूप नहीं बनो।" "इस संसार के स्वरूप के अनुरूप मत बनो।" यह एक बड़ी बात है, 1 यूहन्ना और यहाँ दोनों में संसार के अनुरूप होने की। वह कहता है, "बल्कि अपने मन के नए होने से अपने आपको बदलो।" आप कैसे बदलते हैं? अपने मन के नए होने से? तो यहाँ ये महत्वपूर्ण शब्द हैं। जैसे-जैसे पौलुस परिवर्तन करता है, रोमियों की पुस्तक में बलिदान प्रणाली उसका एक बड़ा हिस्सा होने जा रही है।

अब, हम पुस्तक में ही जाना चाहते हैं और मैं यहाँ सबसे पहले हमार्टियोलॉजी के विषय पर बात करना चाहता हूँ। हमार्टियोलॉजी रोमियों की पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक है। हमार्टियोलॉजी क्या है? आप कहते हैं कि कुछ स्कूलों में हमार्टियोलॉजी में एक प्रमुख विषय है, हमार्टिया का अर्थ है पाप। तो यह पाप का अध्ययन है। आज कुछ स्कूल इसके लिए जाने जाते हैं। मैं बस मज़ाक कर रहा हूँ और यह शायद बीमार है। लेकिन वैसे भी, रोमियों 1-3 पाप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। रोमियों 1-3 पाप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह एक बड़ी बात बन गई है। मूल रूप से वह कहने जा रहा है कि अन्यजाति पापी हैं। रोमियों 1 और सभी यहूदी जाने वाले हैं, हाँ, अन्यजाति पापी हैं। फिर वह जाने वाला है, एक मिनट रुको, तुम यहूदी भी पापी हो। फिर वह निष्कर्ष निकालने वाला है कि हम सभी पापी हैं। तो अध्याय एक, दो और तीन, अन्यजाति, पापी यहूदी, पापी, हम सभी पापी हैं रोमन अध्याय एक, दो और तीन।

यह हमारी संस्कृति के कारण एक मुद्दा उठाता है। जब आप यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में सोचते हैं, तो क्या हुआ है, यीशु मसीह आए, वे क्यों आए? "देखो," जॉन बैपटिस्ट कहते हैं, "देखो भगवान का मेम्ब्रा" कौन क्या करता है? "जो दुनिया के पाप को दूर करता है।" मसीह का मुख्य कार्य दुनिया के पाप को दूर करना था। यदि कोई संस्कृति इस बात से इनकार करती है कि पाप है, तो वे जो कर रहे हैं वह यह है कि भगवान ने अपने बेटे का खून बहाकर हमें बताया कि पाप

कितना महत्वपूर्ण है। हमारी संस्कृति में, मैं जो सुझाव दूंगा वह यह है कि हमने पाप को कम करके आंका है। इसलिए, और कई लोग इसके अस्तित्व को नकार देंगे। ऐसा करने में वे यह मानते हैं कि मोक्ष की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कोई पाप के अस्तित्व को नकारता है, तो आप मोक्ष की आवश्यकता को नकारते हैं और इसलिए उद्धारकर्ता की आवश्यकता को नकारते हैं। पाप के कारण आपको उद्धारकर्ता की आवश्यकता है? अगर मैं ठीक हूँ, तो आप ठीक हैं। इसलिए पाप की यह धारणा वास्तव में महत्वपूर्ण है और इस पर हमला किया जा रहा है। अब मुझे पता है कि इस पर हमला किया गया है, मूलतः इसे हमारी शब्दावली से तथा अमेरिकी अस्तित्व से मिटा दिया गया है।

तो आप कैसे बताएँगे कि कोई चीज़ सही है या गलत? आप कैसे बताएँगे कि कोई चीज़ सही है या गलत? रोमियों ने यही कहा है। रोमियों 1:18 और 32 में लिखा है, "परमेश्वर का क्रोध।" फिर से, क्या हम परमेश्वर के क्रोध के बारे में बात करना पसंद करते हैं? हम कहते हैं, हिल्लेब्रांट। यह सब पुराने नियम की बातें हैं जब पुराने नियम में परमेश्वर क्रोधित हुआ था। वहाँ, आप जानते हैं, ज़मीन फट गई और कोरह, दातान और अबीराम को निगल लिया। साँप बाहर निकले और लोगों को डसने लगे और इसलिए पुराने नियम में परमेश्वर का क्रोध था। नहीं, नहीं। यह रोमियों का है। रोमियों 1:18 "परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन लोगों की सारी अधर्मता और दुष्टता के विरुद्ध प्रकट होता है जो सत्य को दबाते हैं।" वे अपनी दुष्टता से सत्य को कैसे दबाते हैं? "इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें उनके पापी, उनके हृदय की पापी अभिलाषाओं के अधीन कर दिया।" परमेश्वर ने उनका न्याय कैसे किया? परमेश्वर ने उनका न्याय किया। वे पापी थे। परमेश्वर का क्रोध उन पर टूट पड़ता है। परमेश्वर उनका न्याय कैसे करता है? वह उन्हें वही देता है जो वे चाहते हैं। उनका पाप उनका अपना विनाश है। वह उन्हें उनके अपने पाप के हवाले कर देता है और उनका अपना पाप उनका अपना विनाश है। और इसलिए यह है, "हालाँकि वे परमेश्वर के धर्मी आदेशों को जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं वे मृत्यु के पात्र हैं, फिर भी वे न केवल ये काम करते रहते हैं बल्कि उन लोगों को भी मंजूरी देते हैं जो इनका अभ्यास करते हैं।"

रोमियों 12:9 वास्तव में महत्वपूर्ण श्लोक रोमियों 12:9 परमेश्वर ने पौलुस के माध्यम से कहा, पौलुस ने कहा, मुझे इसका एक अंश पढ़ने दो। "जो अच्छा है उससे चिपके रहो।" मुझे लगता है कि

गॉर्डन कॉलेज में कई तरीकों से, हम इसे अच्छी तरह से करते हैं। "जो अच्छा है उससे चिपके रहो।" पता लगाओ कि क्या अच्छा है। इसे पकड़ो। "जो अच्छा है उससे चिपके रहो।" लेकिन हम अक्सर इस पहली नफ़रत के दूसरे पहलू को छोड़ देते हैं। बुराई क्या है? जो बुरा है उससे घृणा करो? और जो बुरा है उससे घृणा करने के बजाय, हम कहते हैं, ठीक है, आप जानते हैं, यह वास्तव में इतना बुरा नहीं है। आइए देखें कि क्या हम इसे स्वीकार कर सकते हैं। आप जानते हैं, हमें बस उन्हें बेहतर ढंग से समझने की ज़रूरत है और यहाँ क्या हो रहा है? नहीं, नहीं। यहाँ कहा गया है कि जो बुरा है उससे घृणा करो। जो अच्छा है उससे चिपके रहो। और जो मैं सुझा रहा हूँ वह यह है कि हम सभी यहाँ शास्त्र के कुछ हिस्सों को स्वीकार करते हैं। यह हिस्सा परमेश्वर के क्रोध के बारे में बात कर रहा है। यह वास्तव में एक गंभीर अवधारणा है।

तो आम बहाने क्या हैं? हम गलत काम करने, पाप करने के लिए कौन से बहाने बनाते हैं? कुछ लोग कहेंगे, सब कुछ सापेक्ष है। सब कुछ सापेक्ष है। आप कैसे जानते हैं कि एक संस्कृति में क्या गलत है? एक चीज़ गलत है और दूसरी संस्कृति में, यह नहीं है। मेरा मतलब है, हम इस कक्षा में करते हैं। यहाँ जॉर्डन में जॉर्डन है, उनके पास केमोश नाम का एक भगवान था जो बच्चों को जलाता था। वे बच्चों को इस भगवान केमार्ट तक जलाते हैं। और आप कहेंगे, ठीक है, यह उनकी संस्कृति थी। तो यह उनके लिए ठीक था। आप कहेंगे, सच में? तो बच्चों की बलि। ठीक है? और आप कहेंगे, क्या? तो संस्कृति इन चीज़ों को निर्धारित करती है। सब कुछ सापेक्ष है। मेरे छात्र जानते हैं कि सब कुछ सापेक्ष नहीं है। हालाँकि हर कोई कह रहा है, "ओह हाँ, यह सिर्फ सापेक्ष है। संस्कृति पर निर्भर करता है" अगर मुझे कोई छात्र मिलता है जो किसी परीक्षा में 8 अंक प्राप्त करता है, तो मान लीजिए कि उसे 90 अंक मिले हैं, और मैं F देता हूँ और जब मैं छात्र को परीक्षा वापस भेजता हूँ, तो मैं कहता हूँ, "ठीक है, सब कुछ सापेक्ष है। तो मैंने कहा, तुम्हें 90 अंक मिले हैं, मैंने तुम्हें F दिया है। मैंने तुम्हें उस 90 में F दिया है, तुम्हें पेपर में 90 अंक मिले हैं। मैंने तुम्हें F दिया है। सब कुछ सापेक्ष है। तो तुम्हें पता है, जो तुम्हारे लिए अच्छा लगता है, वह मेरे लिए अच्छा नहीं है। इसलिए मैंने तुम्हें " दिया। वे खूनी हत्या चिल्लाएँगे। दूसरे शब्दों में, वे कहते हैं कि सब कुछ सापेक्ष है और वे कहते हैं कि जैसे ही वह उनके पैर की उंगलियों पर कदम रखता है, जवाब नहीं है। सब

कुछ सापेक्ष नहीं है। तो वैसे भी, सब कुछ सापेक्ष है जैसा कि उनकी संस्कृति और चीजों में उपयोग किया जाता है। जब तक यह किसी और को चोट नहीं पहुँचाता, मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ और पाप या समस्याएँ तब तक देखी जाती हैं जब तक मैं किसी और को चोट नहीं पहुँचाता। मैं ठीक हूँ। शास्त्रों में जो कहा गया है, उससे कभी-कभी कोई फर्क नहीं पड़ता कि वहाँ कोई और है या नहीं। जो होता है वह यह है कि यह भगवान के सामने मायने रखता है। यह भगवान के सामने मायने रखता है और इसलिए यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है, भगवान को तस्वीर में लाना।

तो कभी-कभी, आप जानते हैं कि हमारी संस्कृति में पी.सी., राजनीतिक रूप से सही चीजें यह निर्धारित करती हैं कि हमारी संस्कृति में क्या सही है और क्या गलत है। और मैंने पिछले 10 वर्षों में यह देखा है कि मैं पढ़ा रहा हूँ कि यदि आप, छात्र सभी पी.सी. चीजों पर हंसते हैं, लेकिन जब आप वास्तव में पी.सी. की सीमा पार करते हैं, तो वे इसे संभाल नहीं पाते हैं। वे पूरी तरह से घबरा जाते हैं। यह ऐसा है, आप जानते हैं, यह भयानक और सामान जैसा है। वे वास्तव में इसे संभाल नहीं सकते हैं। और यह मेरे लिए बहुत दिलचस्प रहा है कि उन्हें कितनी दृढ़ता से प्रेरित किया गया है। पी.सी. पाप है। पी.सी. ने मूल रूप से हमारी संस्कृति में पाप की धारणा को बदल दिया है। और यदि आप इसका उल्लंघन करते हैं, जो कि पी.सी. है, तो आपने हमारी संस्कृति में पाप किया है। यह बहुत दिलचस्प है। शास्त्र से बहुत अलग।

अब लोग इस पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, बजाय इसके कि वे पश्चाताप करें जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है और मसीह पर भरोसा करें। लोग कहते हैं, मैं पीड़ित हूँ। मैं वास्तव में इसे रोक नहीं सका। मैं पीड़ित हूँ। यह मेरी गलती नहीं थी। मेरे माता-पिता ने मेरे साथ ऐसा किया। मेरे माता-पिता ने मेरे साथ ऐसा किया। मैं एक अव्यवस्थित परिवार से आया हूँ, इसलिए मैं अव्यवस्थित हूँ। आपको मुझे कुछ हद तक आराम देना चाहिए। समाज ने मेरे साथ ऐसा किया। मैं यहीं पला-बढ़ा हूँ। यह वह समाज है जिससे मैं आया हूँ, इसलिए मुझे दोष मत दो। समाज को दोष दो। तो समाज ने, आप जानते हैं, ये सब दुष्ट काम किए हैं। इसलिए मैं कोई व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं लेता।

व्यक्तिगत जिम्मेदारी एक बड़ी बात है। और मुझे लगता है कि आप में से कुछ ने देखा होगा कि जब मैंने ओल्ड टेस्टामेंट किया था, तो मैंने चुनाव पर कितना जोर दिया था और चुनाव कितना

महत्वपूर्ण है। चुनाव से परिणाम सामने आते हैं। और फिर खुद के लिए जिम्मेदारी लेना। इसे ही हम परिपक्वता कहते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने द्वारा किए गए चुनावों की जिम्मेदारी लेता है। हर कोई चुनाव करने की स्वतंत्रता चाहता है, लेकिन कोई भी उन चुनावों की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता। इसलिए हम इससे बाहर निकलने के लिए दूसरे लोगों को दूसरे तरीकों से दोषी ठहराते हैं।

मेरे जीन ने मेरे साथ ऐसा किया। यह वास्तव में मैं नहीं था। यह बस, मैं इस तरह से प्रोग्राम किया गया था। मेरे जीन ने मेरे साथ ऐसा किया। मेरे हार्मोन ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया। और इसलिए हम अपने आनुवंशिक, पृष्ठभूमि को दोष देते हैं। फिर से, यह मेरी गलती नहीं है। मैं बहुत छोटा हूँ। मैं बहुत छोटा हूँ। और वे इसके लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि मुझे एफ़्लुएंज़ा हुआ है। क्या आप जानते हैं कि एफ़्लुएंज़ा क्या है? यह मूल रूप से मैं बाहर जाता हूँ और नशे में धुत हो जाता हूँ या वास्तव में यह मैं नहीं हूँ, लेकिन वैसे भी, एक बच्चा था, यह टेक्सास का एक 16 वर्षीय बच्चा था जो बहुत नशे में था, बाहर जाता है और वह सीमा से बहुत अधिक पीता है, सीमा से बहुत अधिक, शराब की सीमा से दोगुना या जो भी हो और मूल रूप से वह बच्चा तीन या चार लोगों को मार देता है।, उन्हें मार देता है और फिर बचाव में उन्होंने तर्क दिया कि वह सही और गलत के बीच अंतर नहीं जानता था क्योंकि उसे एफ़्लुएंज़ा था। उसके माता-पिता ने उसे बिगाड़ा, उसके माता-पिता ने उसे बिगाड़ा। इसलिए वह हत्या के लिए जिम्मेदार नहीं था। वैसे, ये लोग अभी भी मर चुके हैं। ये लोग अभी भी मरे हुए हैं। वह यह कहते हुए घूम रहा है कि, मेरे पास बहुत ज़्यादा पैसा और बढ़िया कारें और ये सब चीज़ें थीं। मैं खुद को रोक नहीं पाया और इसलिए उसे एफ़्लुएंज़ा हो गया। वैसे, यह बच्चा इससे दूर हो गया। वे, वे लोग मर चुके हैं। वह चला गया। वह बच्चा चला गया और अब हाल ही में उसे फिर से जेल में डाल दिया गया है क्योंकि वह भाग गया था, उसने फिर से शराब पी और अपनी परिवीक्षा को तोड़ दिया और मैक्सिको चला गया। फिर उनके पास यहाँ एक अतिरिक्त वस्तु थी। तो यह है, लेकिन यह वह जगह है जहाँ हम अपनी संस्कृति में हैं।

दूसरा एक माल्वो नामक व्यक्ति था। वह अपनी कार की डिक्की से लोगों को गोली मार रहा था, लोगों को मार रहा था, सीरियल किलर था। वह 17 साल का था और वे बस बेहोश हो गए। मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। वह सिर्फ 17 साल का है। वह अभी भी, वह अभी भी एक बच्चा है, इसलिए आप

उसे वयस्क के तौर पर जल्दी नहीं आज़मा सकते। और इसलिए आपको हमारी संस्कृति में आगे-पीछे बहस करनी होगी।

कुछ लोग, जब उन्हें अपने पाप का सामना करना पड़ता है, तो वे आपके सामने अपनी गलती को पेश करते हैं और कहते हैं, "तुम पाखंडी हो, तुम पाखंडी हो। तुम भी वही कर रहे हो। तुम यह, वह या दूसरी चीज़ कर रहे हो।" इसलिए एक पाप पर चिंतन करने और आत्मनिरीक्षण करने और खुद को देखने के बजाय, वे इसे वापस जोड़ने के मामले में हमलावर मोड़ में चले जाते हैं, आप भी एक पाखंडी हैं, और पाप के लिए अपनी जिम्मेदारी का सामना करने के बजाय वे दूसरों पर आरोप लगाते हैं।

दूसरा तर्क, ज़ाहिर है, यह है कि मैं पागल हूँ। यह अभी-अभी ऑरोरा और डेनवर में हुआ है, जहाँ एक आदमी अंदर आता है और इन लोगों को गोली मारता है। मुझे नहीं पता कि जब वे अंदर आए, एक थिएटर के सामने और बस सभी को गोली मारना शुरू कर दिया, तो कितने लोग मारे गए। फिर जब यह सब हो गया, तो उसने दावा किया और उसने यह योजना बनाई, उसने फ्लैक जैकेट या कुछ और पहना हुआ था, और फिर इन सभी लोगों को मार दिया गया। वह बस कहता है, ठीक है, मैं पागल था। मैं पागल था। इसलिए, आप जानते हैं, आप वास्तव में मेरे साथ बहुत कुछ नहीं कर सकते क्योंकि मैं पागल हूँ और नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं हूँ। वास्तव में मेरे पास सभी अधिकार और हमारे अधिकार और स्वतंत्रताएँ और इस तरह की चीज़ें हैं।

हाँ, यहाँ एक और है। मैं एक स्वतंत्रता सेनानी हूँ। मैं एक स्वतंत्रता सेनानी हूँ, इसलिए मैं अन्य लोगों को मार सकता हूँ क्योंकि मैं एक स्वतंत्रता सेनानी हूँ। इसलिए हमारी संस्कृति अब इस बात से भरी हुई है जिसे हम कार्यस्थल हिंसा कहते हैं। वह आदमी चिल्लाता है, अल्लाह अकबर और फिर 13 लोगों को गोली मार देता है। हम इसे कार्यस्थल हिंसा कहते हैं क्योंकि हम नहीं कह सकते, हम नहीं कह सकते कि यह वास्तव में क्या है, भले ही वह आदमी चिल्लाता है, अल्लाह अकबर। लेकिन जाहिर तौर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए हमारी संस्कृति, हम वास्तव में पाप के प्रति सहिष्णुता में हैं। पाप और सापेक्षवाद के प्रति सहिष्णुता एक बड़ी बात है। अगर कोई नहीं जानता कि पाप क्या है तो वह पश्चाताप कैसे कर सकता है?

तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि हमारी संस्कृति में, हमने वास्तव में पाप की धारणा को बदनाम किया है और इसलिए हमने लोगों को पश्चाताप और मोक्ष से दूर कर दिया है क्योंकि पश्चाताप और मोक्ष की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मैं एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति हूँ। मैं वही हूँ जो मैं हूँ और मेरे सारे पाप, मैंने ड्रग्स लिए और लोगों को चोट पहुँचाई, लेकिन इसने मुझे वह व्यक्ति बनाया जो मैं आज हूँ। मैं जो हूँ वही होना ही काफी है। और आप कहते हैं, हाँ। तो ये कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे हमारी संस्कृति वास्तव में, वास्तव में संघर्ष करती है।

अब मैं यहाँ कुछ अन्य बातों पर बात करना चाहता हूँ। हम पाप की धारणा से कैसे छुटकारा पा सकते हैं? यही हम अभी बात कर रहे थे। मैं एक पीड़ित हूँ और यह चीजों की सूची में आता है। मैं एक पीड़ित हूँ। मेरे माता-पिता ने मेरे साथ ऐसा किया। मेरे जीन ने मेरे साथ ऐसा किया और समाज ने ऐसा किया। पीछे हटो, तुम एक पाखंडी हो। मेरे बारे में कुछ भी गलत कहने का तुम्हें कितना अधिकार है? मनोवैज्ञानिक, मुझे कुछ मनोवैज्ञानिक समस्या है और इसलिए यह ठीक है। सापेक्षवाद, सहनशीलता और स्वतंत्रता। मैं जो चाहूँ करने के लिए स्वतंत्र हूँ इसलिए मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। कोई उपाय नहीं है। इसलिए कोई परिणाम नहीं है। बेशक कुछ लोग वास्तव में प्रेम और अनुग्रह का उपयोग करते हैं कि अनुग्रह मुझे दूसरा मौका देगा। भगवान मुझे दूसरा मौका देंगे। आप जानते हैं कि यह सच है। आप जानते हैं, और आपको वहाँ कुछ बड़े सवाल पूछने होंगे। कभी-कभी भगवान उन्हें उनके अपने पाप के हवाले कर देते हैं जैसा कि हम रोमियों 1 में देखते हैं।

तो, अब, सांस्कृतिक और पार-सांस्कृतिक पाप की धारणाओं को अलग करने का महत्व, मैं ऐसे युग में बड़ा हुआ, जिसमें, सिनेमा जाना पाप था। तो आप देख सकते हैं कि कभी-कभी अतीत में लोगों ने पापपूर्ण चीजें बना दी हैं जो सिर्फ सांस्कृतिक मानदंड थे और वास्तव में ऐसा नहीं होना चाहिए था। इसलिए आपको पवित्रशास्त्र से जुड़े रहना होगा। आपको इसे छोड़ना होगा, भगवान क्या कहते हैं, भगवान इन चीजों को कैसे देखते हैं? और आपको यह मिल गया है। यहीं पर हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं और हत्या, झूठ बोलना, चोरी करना, उन प्रकार की चीजें, लालच, ईर्ष्या, उन प्रकार की चीजों का पता लगाने की कोशिश करते हैं।

हम रोमियों 1 में देखेंगे। अब कुछ लोग कहते हैं कि वे बस नहीं जानते। लेकिन यह बहुत

दिलचस्प है। रोमियों 1:20 में, यह कहा गया है, लोगों के पास कोई बहाना नहीं है। आप कहते हैं, ठीक है, वे बाइबल नहीं जानते। वे रोमियों को नहीं जानते। रोमियों 1:20 में यह कहा गया है, "क्योंकि दुनिया के निर्माण के समय से, परमेश्वर के अदृश्य गुण, उसकी सनातन सामर्थ्य और ईश्वरीय स्वभाव, जो कुछ बनाया गया है, उससे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।" लोग प्रकृति को देखकर परमेश्वर के बारे में बातें जान सकते हैं। "दुनिया के निर्माण से, परमेश्वर के अदृश्य गुण स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं। उसकी सनातन सामर्थ्य, उसका दिव्य स्वभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि क्या बनाया गया है" जो परमेश्वर ने बनाया है। यह एक प्रकार से बढ़ई की तरह है। आप बढ़ई के बारे में कुछ बता सकते हैं। आप उसके उत्पाद को देखते हैं और आप व्यक्ति के बारे में कुछ बता सकते हैं। इसलिए वह कहता है, क्योंकि आप प्रकृति में यह बता सकते हैं, लोग बहाने के बिना हैं, वे बहाने के बिना हैं, "आकाश परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता है।" भजन 19 कहता है।

I. रोमियों 1-3 पापी अन्यजाति, पापी यहूदी, सभी पापी [58:30-1:05:08]

अब यह सवाल रोमियों 1 में आता है कि क्या परमेश्वर कभी लोगों को छोड़ देता है? और रोमियों 1 में यह बहुत दिलचस्प है जैसा कि आप यहाँ सूची के माध्यम से पढ़ते हैं। मुझे इसे पढ़ने दें क्योंकि यह वास्तव में, यह मर्मस्पर्शी है और बहुत से लोग सोचते हैं, अच्छा यह है, आप जानते हैं, यह वास्तव में परमेश्वर के बारे में कैसे बात कर रहा है? इसका उत्तर है हाँ, यह पवित्रशास्त्र में है। यह परमेश्वर हमें बता रहा है कि वह कैसा है। वह आपको समय से पहले चेतावनी दे रहा है और यह कहता है, रोमियों 1:26 और उसके बाद। वह कहते हैं, या मैं पद 24 से शुरू करता हूँ, "इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की पापमय अभिलाषाओं के अनुसार व्यभिचार में छोड़ दिया कि वे एक दूसरे के साथ अपने शरीरों का अनादर करें। उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना दिया। उन्होंने आराधना और सेवा की, सृष्टिकर्ता की अपेक्षा जिसकी सदा स्तुति होती है, उन्होंने वस्तुओं की सृष्टि की। आमीन। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें लज्जाजनक वासना में छोड़ दिया। यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों ने भी अपने स्वाभाविक यौन संबंधों को अप्राकृतिक यौन संबंधों से बदल दिया। उसी प्रकार पुरुषों ने भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संबंध त्याग दिए और एक दूसरे के प्रति वासना से जल उठे। पुरुषों ने एक दूसरे के साथ लज्जाजनक कार्य किए और अपनी भूल के लिए

उचित दण्ड पाया।"

तो यहाँ आपके पास ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें पापपूर्ण बताया जा रहा है। भगवान उन्हें त्याग देते हैं। इसके अलावा, "जैसे उन्होंने भगवान के ज्ञान को बनाए रखना उचित नहीं समझा।" इसलिए क्योंकि उन्होंने भगवान को तस्वीर से बाहर करने की कोशिश की, भगवान ने उन्हें एक भ्रष्ट मन के हवाले कर दिया और अब यह नीचे जाने वाला है। और वह कहते हैं, एक भ्रष्ट मन क्या है? ताकि वे वो करें जो नहीं करना चाहिए। वे हर तरह की दुष्टता से भर जाते हैं। अब वह यहाँ बुराई, लालच और भ्रष्टता की एक सूची के माध्यम से नीचे जाता है। वे ईर्ष्या, हत्या, झगड़े, छल और द्वेष से भरे हुए हैं। वे गपशप करने वाले हैं। ध्यान दें, गपशप इन पापों की इस सूची में है। "वे गपशप करने वाले, निंदा करने वाले, ईश्वर से नफरत करने वाले, अहंकारी, अहंकारी, डींग मारने वाले होते हैं। वे बुराई करने के तरीके खोजते हैं। वे अपने माता-पिता की अवज्ञा करते हैं। उनमें कोई समझ नहीं है, कोई निष्ठा नहीं है, कोई प्रेम नहीं है, कोई दया नहीं है। हालाँकि वे ईश्वर के धर्मी आदेश को जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं, वे मृत्यु के पात्र हैं। वे न केवल ये काम करते रहते हैं, बल्कि उन लोगों को भी मंजूरी देते हैं जो ऐसा करते हैं।" तो यह काफी हद तक अभियोग है जहाँ ईश्वर ने सद्गुणों की एक सूची दी है और अन्य स्थानों पर। यहाँ दुर्गुणों की एक सूची दी गई है और व्यवहार के अनुसार उन्हें नीचे रखा गया है।

क्या हम उनसे बेहतर हैं? यह बात सामने आती है। आप कहते हैं, ठीक है, आप इस पर बहुत जोर दे रहे हैं। "क्या हम उनसे बेहतर हैं?" और जवाब है, नहीं। हम सभी पापी हैं। यही बात पॉल ने तीसरे अध्याय में कही है। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" यह कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बातें उठाता है। परमेश्वर, अध्याय दो, पद चार में, यहाँ एक सुंदर पद है जो रोमियों 2:4 में यह कहता है। और यह कहता है, "या क्या तुम उसकी कृपा, सहनशीलता और धीरज के धन को तुच्छ समझते हो, और यह नहीं जानते कि परमेश्वर की कृपा है।" परमेश्वर की कृपा का उद्देश्य क्या है? परमेश्वर की कृपा आपको पश्चात्ताप की ओर ले जाने के लिए है। परमेश्वर की कृपा और उसकी दया आपको यह कहते हुए और अधिक पाप करने की अनुमति देने के लिए नहीं है कि, "परमेश्वर मुझे क्षमा करेगा।"

नहीं, परमेश्वर की दया और उसकी दया यह कहने के लिए बनाई गई है कि, परमेश्वर मुझसे कितना प्यार करता है? और मुझे अपने पाप का पश्चात्ताप करने की आवश्यकता है? तो परमेश्वर की दया हमें पश्चात्ताप की ओर ले जानी चाहिए।

परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप को समझने में आधुनिक कठिनाई, जिसने यहाँ उल्लेख किया है कि रोमियों 1:18 में परमेश्वर का क्रोध "स्वर्ग से प्रकट होता है, उन लोगों की सारी अभक्ति और दुष्टता पर जो अपनी दुष्टता से सत्य को दबाते हैं।" और फिर यह अध्याय 2:5 में उसी तरह के विचार के बारे में बात करता है, "लेकिन अपने हठ और अपश्चात्तापी मन के कारण, तुम परमेश्वर के क्रोध के दिन के लिए अपने विरुद्ध क्रोध इकट्ठा कर रहे हो। जब उसका धर्मी न्याय प्रकट होगा, तो परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामों के अनुसार देगा। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामों के अनुसार देगा।" वह जो कह रहा है वह यह है कि आपके निर्णय मायने रखते हैं। आपके द्वारा लिए गए निर्णयों का लेखा-जोखा होगा।

अन्यजाति पापी हैं और फिर एक सर्पिल नीचे की ओर जाता है जहाँ परमेश्वर उन्हें इस सर्पिल में अपनी इच्छाओं के हवाले कर देता है जो नीचे की ओर जाता है। तो यहूदी, फिर वह यहूदियों के बगल में जाता है और कहता है, ठीक है, अन्यजाति पापी हैं और सभी यहूदी तालियाँ बजा रहे हैं। हाँ, अन्यजाति पापी हैं और वे इन सभी बुराइयों और चीज़ों में सर्पिल नीचे की ओर जाते हैं।

फिर पॉल ने आगे कहा, यहूदी पापी हैं और उन्होंने कहा, यहूदी क्यों पापी हैं? क्योंकि यहूदी कानून जानते हैं, लेकिन वे कानून का पालन नहीं करते। इसलिए उन्होंने कहा, मूल रूप से आप लोग पाखंडी हैं। अध्याय दो की इक्कीसवीं आयत और उसके बाद कहा गया है, "तो तुम जो दूसरों को सिखाते हो, खुद को नहीं सिखाते। तुम जो चोरी के खिलाफ उपदेश देते हो। क्या तुम चोरी करते हो?" और इसलिए पॉल ने यहाँ उन पर पाखंड का आरोप लगाया। वे लोगों से कहते हैं कि चोरी मत करो, लेकिन फिर वे खुद चोरी करते हैं। इसलिए जोर देने का एक बदलाव है।

इसलिए, रोमियों 3:20 "इसलिए कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के पालन से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं ठहराया जाएगा, बल्कि व्यवस्था के द्वारा हम पाप के प्रति सचेत होते हैं।" पुराने नियम की

व्यवस्था का कार्य क्या है? क्या हुआ कि यहूदियों ने व्यवस्था को लिया और उसके कार्य को उलट दिया। परमेश्वर ने उन्हें यह दिखाने के लिए व्यवस्था दी कि वे पापी थे। इसलिए यदि उन्हें व्यवस्था का अनुभव करना चाहिए, तो व्यवस्था दिखाएगी कि वे पापी हैं। इसके बजाय उन्होंने व्यवस्था ली और इसका उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि वे कितने धर्मी थे। तो आप देखते हैं कि यह कैसे उलट गया है? परमेश्वर ने उनके पाप को उजागर करने के लिए व्यवस्था दी, और इसके बजाय, उन्होंने व्यवस्था ली और इसे एक तरह के गर्व में बनाया, अपनी धार्मिकता की घोषणा करने के अहंकारी तरीके से क्योंकि उन्होंने "व्यवस्था का पालन किया।"

यीशु उस पर से पर्दा हटा देंगे और कहेंगे, रुको, रुको, रुको। यदि आपने किसी के प्रति अपने दिल में क्रोध रखा है, तो आप पहले ही हत्या कर चुके हैं, और यीशु कानून लेते हैं, दिल में घुसकर उन्हें दिखाते हैं कि वे पापी हैं। और यद्यपि कानून पाप को उजागर करता है, लेकिन कानून का उद्देश्य कभी यह दिखाना नहीं था कि लोग धर्मी थे। कानून का उद्देश्य यह दिखाना था कि लोग पापी थे।

जे. रोमियों में विषय: संपूर्ण भ्रष्टता [1:05:08-1:14:32]

अब रोमियों में कुछ विषय। पहला विषय जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ वह हैमार्टियोलाजी में कुल भ्रष्टता। और इसलिए हम इनमें से कुछ अवधारणाओं के साथ काम करेंगे। ये धार्मिक अवधारणाएँ हैं। और पहली यह है कुल भ्रष्टता। अब, मैं आपसे ईमानदारी से कहूँ तो, मुझे कुल भ्रष्टता शब्द पसंद नहीं है। मुझे ऐसे लोगों में प्रशिक्षित किया गया था जिन्हें कुछ मायनों में सुधारवादी मंडल माना जा सकता है, कुल भ्रष्टता बहुत बड़ी थी। मुझे यह शब्द "कुल" और इस तरह की सभी चीजें पसंद नहीं हैं। इसलिए जबकि मैं इस बात से सहमत हूँ कि मनुष्य भ्रष्ट हैं, हैमार्टियोलाजी पाप का अध्ययन है और यह हमारे साथ क्या करता है और कैसे उद्धार हमें इससे मुक्त करता है।

लेकिन मैं इस तरह से भ्रष्टता को देखता हूँ। मैं चुनता हूँ, लोग इस पूरी तरह से भ्रष्टता में पड़ जाते हैं और फिर वे कक्षा में चारों ओर देखते हैं और कहते हैं, "आह, ये सभी छात्र पूरी तरह से भ्रष्ट हैं।" और वे देखना शुरू करते हैं, आप हर जगह पाप देखते हैं। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि जब

मैं पूरी तरह से भ्रष्टा के बारे में बात करता हूँ, तो मैं खुद को देखता हूँ। दूसरे शब्दों में, मुझे एहसास होता है कि मेरा दिमाग कितना भ्रष्ट है, इसलिए जब मैं आज कार में यात्रा कर रहा हूँ, और मैं सोच रहा हूँ कि मैंने वे विचार क्यों सोचे। मैंने ऐसी बातें क्यों कही? मैं अपनी खुद की भ्रष्टा के बारे में सोचता हूँ। इसलिए जब मैं पूरी तरह से भ्रष्टा के बारे में सोचता हूँ, तो मैं अपने अंदर देखता हूँ। जब मैं दूसरों की ओर देखता हूँ, तो मैं उन्हें ईश्वर की छवि में बनाया हुआ देखता हूँ। पुराने नियम में यह एक बहुत बड़ा कारक है कि लोग ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं। क्या आप इस गरीब व्यक्ति में ईश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित देख सकते हैं जो सभी प्रकार की चीजों में शामिल हो सकता है?

मैंने 10 साल जेल में काम किया है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो बलात्कारी और बच्चों के साथ छेड़छाड़ करने वाले और हर तरह के काम करते हैं। आप देखिए, क्या आप इन लोगों में ईश्वर की महिमा देख सकते हैं? इसलिए मैं दूसरे लोगों को ईश्वर की छवि के रूप में देखना पसंद करता हूँ। हालाँकि मैं खुद पर पूरी तरह से भ्रष्टा लागू करता हूँ।

मुझे "संपूर्ण" शब्द पसंद नहीं है। मैं कहूँगा, भ्रष्टा। हम सभी पापी हैं, यह पक्का है। तो पूर्ण भ्रष्टा में क्या समस्या है? अध्याय तीन पद नौ में पॉल रोमियों 3:9 में कहते हैं, "कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं। कोई भी समझदार नहीं है। कोई भी ईश्वर को खोजने वाला नहीं है।" अब, यह एक बहुत ही दिलचस्प कथन है: "कोई भी ईश्वर को खोजने वाला नहीं है।" मैं बहुत सी सभाओं में गया हूँ जहाँ लोग यह कहते हुए उठते हैं कि मैं अपना शेष जीवन ईश्वर की सेवा करने जा रहा हूँ। पॉल कहते हैं, कोई भी ईश्वर को खोजने वाला नहीं है। इससे हमें थोड़ी सी विनम्रता की ओर ले जाना चाहिए। कोई भी ईश्वर को खोजने वाला नहीं है। इसलिए "कोई भी व्यक्ति व्यवस्था का पालन करने से उसके सामने धर्मी नहीं ठहराया जाएगा, बल्कि व्यवस्था के द्वारा हम पाप के प्रति सचेत होते हैं। सभी ने पाप किया है और ईश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों 3:23 "सभी ने पाप किया है और ईश्वर की महिमा से रहित हैं।" ईश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित करने के लिए मानवीय दयालुता का सबसे बड़ा भला। हम सभी इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहे हैं, लेकिन यही हमारी नियति है। "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?" फिर से, वेस्टमिंस्टर कन्फेशन के साथ मेरी पृष्ठभूमि से, "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?" एक सुंदर कथन है। वे कुरिन्थियों से बाहर निकल रहे हैं। पहला

कुरिन्थियों, "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए उसका आनंद लेना है।" लोगों का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए उसका आनंद लेना है। यह एक सुंदर कथन है। इसलिए पाप परमेश्वर की महिमा से कम होने के विपरीत काम करता है।

रोमियों अध्याय एक में अन्यजाति पापी हैं और रोमियों 2 में यहूदी पापी हैं। तो आपको पाप और अनुग्रह के बीच, व्यवस्था और कार्यों के बीच, शरीर और आत्मा के बीच इस तरह का विरोधाभास मिलता है। अब, कोई व्यक्ति पापी अवस्था से, मैं कैसे कहूँ, ऐसी अवस्था में कैसे पहुँच सकता है जहाँ वह परमेश्वर के सामने धर्मी हो? मूल रूप से यह पश्चाताप और विश्वास के माध्यम से होता है। आप अपने पापों का पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं। पश्चाताप का अर्थ है मुड़ना। भविष्यवक्ताओं में यह एक बहुत बड़ा शब्द है, खासकर यिर्मयाह और अन्य भविष्यवक्ताओं में, शब्द "शुब" है जिसका अर्थ है मुड़ना। मेटान्यू का अर्थ है मुड़ना। तो पश्चाताप पाप से दूर मुड़ना और परमेश्वर की ओर मुड़ना है।

मुझे लगता है कि मेरे लिए, पश्चाताप के बारे में सोचने पर सबसे क्लासिक उदाहरणों में से एक, मैं जेल में था। यह इंडियाना, मिशिगन सिटी, इंडियाना में एक अधिकतम सुरक्षा जेल थी। मैंने वहाँ जिन लोगों को पढ़ाया उनमें से एक का नाम प्रोबो था या हम उसे प्रोबो ही कहेंगे। सभी उसे प्रोबो ही बुलाते थे। प्रोबो एक शांत लड़का था। वह एक बाइकर लड़का था। बहुत बड़ा, बहुत बड़ा, बैल जैसा मजबूत लड़का। उसके शरीर के हर इंच पर टैटू थे। मुझे नहीं पता, मैंने उसके शरीर के हर इंच को नहीं देखा, लेकिन आप जो कुछ भी देख सकते थे, वहाँ एक टैटू था। तो प्रोबो कक्षा में था। मैं प्रोबो को बाइबल पढ़ा रहा था। वह हमेशा मेरा विरोध करने की कोशिश करता था और मुझे दिखाता था कि बाइबल गलत है। वह एक तरह से अविश्वासी था। मेरा मतलब है कि वह गया और मूल अमेरिकी तरह के तरीके अपनाए। तो प्रोबो, वह वियतनाम का एक अनुभवी सैनिक था। बस मैं आपको इसे समझने के लिए एक छोटी सी कहानी बताता हूँ। तो हम एक कक्षा में मुठभेड़ करते थे। हम लगभग एक ही उम्र के थे। मुझे लगता है कि वह शायद मुझसे दो या तीन साल बड़ा होगा। इसलिए वह मेरे पास आता और हम शास्त्रों पर बहस करते और आगे-पीछे होते और संवाद करते,

मुझे लगता है कि हम इसे जिस तरह से कहते थे, चीजों पर चर्चा करते थे। तो, लेकिन यह बहुत ही टकरावपूर्ण था। वह बहुत ही होशियार आदमी था।

वह वियतनाम से वापस आया। वियतनाम के दिनों में डीएमजेड डिमिलिट्राइज्ड जोन नाम की एक चीज थी। मूल रूप से वे उसे डीएमजेड के पीछे छोड़ देते थे। उसे लोगों को मारने के लिए सेना द्वारा प्रशिक्षित किया गया था, लेकिन उन्होंने उसे बंदूक रखने की अनुमति नहीं दी क्योंकि अगर उसके पास बंदूक होती तो वह गोली चलाता और वे उसकी आवाज सुन सकते थे और फिर उन्हें पता चल जाता कि उन्होंने उसे डीएमजेड के दूसरी तरफ गिरा दिया है। तो, दूसरे शब्दों में, वह उस क्षेत्र में था जहाँ उसे नहीं होना चाहिए था। और उन्होंने उसके हाथों में एक चाकू दिया और मूल रूप से कहा, वहाँ जाओ और लोगों को मार डालो और अपना काम करो। आप जानते हैं। इसलिए उन्होंने उसे प्रशिक्षित किया और वहाँ रखा। वह कुछ हद तक विशेष बलों जैसा आदमी था और वे उन्हें जंगलों में छोड़ देते थे। फिर उसने अपना काम किया। उसने वियतनाम में बहुत से लोगों को मार डाला।

जब वह अमेरिका वापस आया, तो उन्होंने उस पर सभी प्रकार की धातुएँ डाल दीं। वह एक महान युद्ध नायक था। वह युद्ध में एक नायक था। वह एक रात एक बार में था और यह अमेरिका है, अब वह अमेरिकी तटों पर वापस आ गया है। वह एक बार में है और बार में दो लोगों ने उस पर हमला किया। तो अचानक वे लड़ने लगे। प्रोबो बिना सोचे समझे। वह जानता है, जब वह लड़ाई में होता है तो मुझे क्या कहना चाहिए, वह जानता है कि क्या करना है। और इसलिए अचानक उसने कहा कि अगली बात जो उसे याद है वह यह है कि उसके दोनों तरफ दो मरे हुए लोग हैं। तो मुझे पता है कि वह कहाँ है, उसने बस अपना काम किया और धमाका, उसने इन दो लोगों को मौके पर ही मार डाला। फिर से, वह प्रशिक्षित था, उसने ऐसा कई बार किया था। इसलिए उन्होंने उसे मूल रूप से उसके शेष जीवन के लिए जेल में डाल दिया। वह मरने से ठीक पहले बाहर आया। वह मर गया।

प्रोबो एक दिन क्लास में था और हम पाप के बारे में बात कर रहे थे और उसने कहा, मुझे सच में पछतावा है। वहाँ था, और आप देख सकते हैं कि, वजन और पश्चाताप, हत्या के लिए

पश्चाताप की आवश्यकता, और यह वास्तव में उसकी आत्मा पर भारी था क्योंकि वह अंदर से बहुत कोमल था। वह बाहर से सख्त आदमी था। जेल में कोई भी गड़बड़ नहीं कर सकता था। हर कोई जानता था कि वह क्या कर सकता है और हर कोई ऐसा था, उस आदमी या आदमी से दूर रहो तुम मारे जा सकते हो क्योंकि वह काफी योद्धा था। लेकिन जब वह सोच रहा था, मुझे लगा कि वह उन दो लोगों के बारे में बात कर रहा है जिन्हें उसने बार में मारा था, लेकिन फिर उसने मुझे सही किया, कहा नहीं। उसने कहा, हाँ बार में दो लोगों के लिए, लेकिन उसने उन सभी लोगों के बारे में कहा जिन्हें मैंने वियतनाम में मारा था। उसने कहा, मुझे बस ऐसा लगता है, और यह उसके लिए भारी था। मैं, जब मैं कह रहा हूँ कि यह सच्चा पश्चाताप था। मेरा मतलब है कि यह लगभग इतना बड़ा, बड़ा सख्त आदमी था जो अपने काम के संदर्भ में जो कुछ भी किया उसके बारे में सोचते हुए लगभग रो रहा था और चाहता था कि उसने ऐसा न किया होता। इसलिए पश्चाताप करना वाकई बहुत बड़ी बात है और हमें पश्चाताप की ज़रूरत है। लेकिन पश्चाताप करने के लिए आपको इसकी ज़रूरत है। आपको यह जानना होगा कि कुछ पापपूर्ण है, ताकि आप उसे बदल सकें। इसलिए सभी ने पाप किया है।

मुख्य बात यह है कि रोमियों की पुस्तक को देखने का एक नया तरीका है, जिसे मैं अभी सामने लाना चाहता हूँ, यह एक नए पॉल की तरह है। यह रोमियों को देखने का एक नया तरीका है। यह इसे इतना नहीं देखता है, आप जानते हैं, एक अनुग्रह, पाप और अनुग्रह और कानून और अनुग्रह, उस तरह की चीज़। लेकिन यह मानवीय ज़रूरत और पर्याप्तता से ज़्यादा यह दिखता है कि रोमियों की पुस्तक यहूदी धर्म से परे एक आंदोलन का वर्णन कर रही है। यहूदी धर्म से एक कदम दूर। फिर यह जिस चीज़ से जूझ रहा है वह यह है: यहूदी और गैर-यहूदी एक साथ कैसे आते हैं? और इसलिए यहूदियों के पास ये सभी जातीय चिह्न हैं, खतना, कुछ खास तरह के खाद्य पदार्थ खाने की रस्में। रोमियों की पुस्तक यह कहने की कोशिश कर रही है कि यहूदी और गैर-यहूदी कैसे एक साथ आते हैं और कैसे इन जातीय चिह्नों को हटा दिया जाता है। आप पाप से कैसे छुटकारा पा सकते हैं?

यहाँ मुख्य बात पश्चाताप करना है। स्वीकार करें। "यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते

हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और न्यायी है।" और इसलिए आपको यहाँ पाप के स्वीकारोक्ति के साथ यह कथन मिलता है। अब मूल रूप से पाप के स्वीकारोक्ति से क्षमा मिलती है। हम अक्सर जो करते हैं वह यह है कि हम सबसे पहले उस पाप को नकारते हैं जो हमने किया था। हम इसे छिपाते हैं, हम इसे अपने अंदर छिपाते हैं। हम तर्क देते हैं और कहते हैं, ठीक है, यह वास्तव में इतना बुरा नहीं था। यह वास्तव में इतना बुरा नहीं था। हम इस तरह से चले जाते हैं। तो यह, काफी हद तक एक समस्या है।

के. रोमनों में विषय-वस्तु: सोला फ़िदेई [1:14:32-1:21:01]

हम इसे स्वीकार करते हैं। हम इसे स्वीकार करते हैं। हम कहेंगे कि मैं बस यही हूँ। मैं बस पापी हूँ। और यह ठीक है। मैं इसका बचाव करता हूँ, हम इसका बचाव करते हैं। हम इसके लिए वकालत करते हैं। अब सोला फ़ाइडेई। क्या आप इसे उठाना चाहते हैं? यहाँ एक सोलर फ़ाइडेई है। एक व्यक्ति मसीह को कैसे जान सकता है? यह उद्धार के माध्यम से है। मुझे बस यह सुनिश्चित करने दें कि मैं इसे समझ गया हूँ। मुझे यहाँ स्क्रीन से इन्हें पढ़ना होगा। सोला फ़ाइडेई केवल विश्वास से है, केवल विश्वास से। क्या यह कुछ ऐसा है जो लूथर ने बनाया है? उत्तर है, नहीं। वास्तव में, अगर हम रोमियों 5:1 जैसी जगहों पर जाते हैं, तो यह कहता है, "इसलिए, जब से हम धर्मी ठहराए गए हैं," हम कैसे धर्मी ठहराए गए हैं? हम कैसे धर्मी ठहराए गए हैं? हम विश्वास के माध्यम से धर्मी ठहराए गए हैं। "हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमें परमेश्वर के साथ शांति मिलती है।"

रोमियों 10:8-9. यह एक सुंदर अंश है। मुझे याद है कि जब मैं छोटा था, तब मेरे माता-पिता मुझे इसे याद करवाते थे। इसमें क्या लिखा है? "वचन तुम्हारे निकट है और यह तुम्हारे मुँह में और तुम्हारे हृदय में है। और यही विश्वास के बारे में संदेश है। जिसे हम घोषित करते हैं। यदि तुम घोषणा करते हो," जैसा कि अब सुसमाचार का वर्णन किया गया है, "यदि तुम अपने मुँह से घोषणा करते हो कि यीशु प्रभु है और अपने हृदय में विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया है," तो उन चीजों में से एक जिस पर हमें वास्तव में विश्वास करना है कि यीशु प्रभु है, यीशु राजा है। वह प्रभु है। "और हम अपने हृदय में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया है," मसीह की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान, "तुम बच जाओगे।" मैं इसे फिर से पढ़ता

हूँ. यह श्लोक शक्तिशाली है. "यदि तुम अपने मुँह से घोषणा करते हो, कि यीशु प्रभु है और अपने हृदय में विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया है, तो तुम बच जाओगे. क्योंकि यह हृदय से है कि तुम विश्वास करते हो और धर्मी ठहरते हो, और यह मुँह से है कि तुम अपने विश्वास को अंगीकार करते हो और बच जाते हो." यह एक सुंदर श्लोक है.

विश्वास से बचाए गए लोग। अब आप कहते हैं, सोला फ़ाइडेई चीज़ के बारे में क्या? आप कहते हैं, एक मिनट रुको लेकिन अगर आप जेम्स की किताब पर जाएँ। मैं इस असली, तरह के सुपर रिफ़ॉर्म चर्च में था, कुछ समय के लिए। और मैंने इन आयतों के लिए इसे सिर्फ़ उस चर्च में एक तरह की छड़ी उठाने के लिए उठाया जो कहता है, "तुम मूर्ख व्यक्ति हो। क्या तुम सबूत चाहते हो कि कर्मों के बिना विश्वास बेकार है?" बिना विश्वास बेकार है, वह कहता है। "क्या हमारे पिता अब्राहम को उनके कामों के लिए धर्मी नहीं माना गया था?" अब, पॉल कहते हैं, "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उनके लिए धार्मिकता के लिए गिना गया," उत्पत्ति 15 का हवाला देते हुए, जेम्स कहते हैं, "हमारे पिता नहीं थे। अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक को वेदी पर चढ़ाने के लिए अपने कामों के लिए धर्मी माना" - उत्पत्ति 22, जब अब्राहम ने इसहाक को चढ़ाया। तो यह है और फिर बस थोड़ा नीचे, "आप देखते हैं कि उसका विश्वास और उसके कार्य एक साथ काम कर रहे थे और उसका विश्वास उसके द्वारा किए गए कार्यों से पूर्ण हो गया।" और फिर नीचे जा रहे हैं। "आप देखते हैं कि एक व्यक्ति को उसके कर्मों से धर्मी माना जाता है, न कि केवल विश्वास से।" यह अध्याय जेम्स 2:24 है, "आप देखते हैं कि एक व्यक्ति को उसके कर्मों से धर्मी माना जाता है, न कि केवल विश्वास से।" इसलिए मुझे लगता है कि आपको इस सोला फ़ाइडेई-केवल विश्वास से सावधान रहना होगा। जेम्स कहते हैं कि यह विश्वास और काम एक साथ हैं।

और इसलिए ऐसे तरीके हैं जिनसे आपको इसे अलग करना होगा। जेम्स और कुछ पॉलिन पत्रों के बीच तनाव है। यहां तक कि लूथर को भी जेम्स की पुस्तक से परेशानी थी। लूथर ने कहा कि जेम्स "एक सही स्ट्रॉली पत्र" था और जेम्स के कुछ संदेशों को खारिज कर रहा था क्योंकि लूथर विश्वास द्वारा उद्धार पर जोर दे रहा था। यह वह विचार था जो वह पुनर्जीवित कर रहा था और जेम्स कहता है, यह विश्वास और कार्य है। वैसे, मैथ्यू 25 की पुस्तक में भेड़ और बकरियों के दृष्टांत पर

वापस जाएं। भेड़ और बकरियां अलग-अलग हैं। मैं भेड़ों को अपने राज्य में क्यों आने देता हूं? मैं जेल में था और तुम आए और मुझसे मिलने आए। मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। यही उन्होंने किया।

मत्ती 7, यह एक दिलचस्प बात है। मत्ती 7:7 और जब हम मत्ती की किताब में थे, तो हमने इस पर चर्चा की थी। इसमें यह लिखा है, "मांगो और तुम्हें दिया जाएगा। खोजो और तुम पाओगे कि दस्तक तुम्हारे लिए खोली जाएगी। मैं यहाँ संदर्भ भूल गया हूँ। हाँ, यह यहाँ है। श्लोक 21 मुझे खेद है। यह श्लोक 7:21 है मैथ्यू 7:21 यह कहता है, "हर कोई जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।" "हर कोई जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।" आप स्वर्ग के राज्य में कैसे प्रवेश करते हैं, "लेकिन केवल वही जो स्वर्ग में रहने वाले पिता की इच्छा पर चलता है।" तो कोई स्वर्ग के राज्य में कैसे प्रवेश करता है? "हर कोई जो हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, लेकिन केवल वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" तो आप इस जोर को समझते हैं। अध्याय 12 में भी यही बात है। अध्याय 12 के अंत में वे यीशु से कहते हैं कि वह कुछ दृष्टांत बताने जा रहा है। वे कहते हैं कि तुम्हारी माँ और भाई बाहर हैं फिर अपने शिष्यों की ओर इशारा करते हुए यह अध्याय है 12:49 मैथ्यू, मैथ्यू 12:49 "उसने अपने चेलों से कहा, जो कोई भी हो, उसके लिए मेरी माता और भाई ये हैं।" मसीह कौन है, माता और भाई। क्या आप मसीह भाई बनना चाहते हैं? आप ऐसा कैसे करते हैं? आप कहते हैं, ठीक है, बस विश्वास से। नहीं, यहाँ मैथ्यू वास्तव में क्या कहता है। वह कहता है, "क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई और बहन और माँ है।" "जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

तो ये महत्वपूर्ण बिंदु हैं। तो यह विश्वास और कर्मों के साथ-साथ काम करने जैसा है और आपको काम करना है। अब कामों का मतलब यह नहीं है कि आप किसी भी चीज़ का घमंड कर सकते हैं। यह सिर्फ़ अनुग्रह से अनुग्रह करके होता है। लेकिन कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है। कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है।

इसलिए यह एक तरह से सशर्त है। तो कुल भ्रष्टा, नहीं। भ्रष्टा, हाँ। कुल, नहीं। यहाँ तक कि, बुरे

लोग भी कुछ अच्छे काम कर सकते हैं। तो सोला फ़ाइडेई, हाँ, यह विश्वास से और सिर्फ़ विश्वास से होता है। लेकिन कामों के बिना विश्वास का एक और पहलू मरा हुआ है।

एल. रोमन: सोटेरियोलॉजिकल टर्म्स [1:21:01-1:30:58 अंत]

अब यह अंतिम भाग है, हम बस इसके बारे में बात करेंगे। ये वे शब्द हैं जिनका उपयोग सोटेरिओलॉजी के लिए किया जाता है। सोटेरिओलॉजी क्या है? सोटेरिओलॉजी रोमनों की पुस्तक है। यह मोक्ष का अध्ययन है। जब यीशु हमारे पापों के लिए मरा, तो पाप के सभी प्रकार के विभिन्न पहलू थे। पाप कोई सरल एकल अवधारणा नहीं है। यह बस एक साधारण बात है - मैंने पाप किया। पाप चीजों को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करता है। इसलिए मोक्ष को पाप के सभी अलग-अलग प्रभावों और पहलुओं का ध्यान रखना पड़ता है। इसलिए यह सोटेरिओलॉजिकल शब्दावली हमें दिखाती है कि यीशु ने हमें किस तरह से बचाया है। इसलिए यह वास्तव में एक सुंदर बात है। सोटेरिओलॉजी हमें यीशु द्वारा हमें मोक्ष प्रदान करने के कई तरीके और कई पहलू दिखाती है।

औचित्य। यह एक पहलू है: औचित्य। इसका मतलब यह है कि हमने रोमियों 5:1 में पढ़ा कि हम न्यायसंगत हैं, हम विश्वास से न्यायसंगत हैं और इसका मतलब है कि हम धर्मी घोषित किए गए हैं। हम धर्मी घोषित किए गए हैं। ऐसे अन्य अंश हैं जो हमें धार्मिकता दिए जाने के बारे में बात करते हैं। हम धर्मी बनाए गए हैं। परमेश्वर मसीह की धार्मिकता लेता है और इसे हम पर डालता है। "इसलिए, जब से हम विश्वास के द्वारा न्यायसंगत हुए हैं, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ शांति रखते हैं।" यह एक कानूनी शब्द है। औचित्य एक कानूनी शब्द है। यह ऐसा है जैसे आप एक न्यायाधीश के सामने हैं और न्यायाधीश आपको धर्मी घोषित करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक बार जब आप अपना कोर्ट केस पूरा कर लेते हैं, तो आपको धर्मी घोषित कर दिया जाता है। यह खत्म हो गया है। आप इसे प्राप्त कर चुके हैं। तो यह एक औचित्य है जहाँ हमें धर्मी घोषित किया जाता है और यह एक कानूनी शब्द है।

एक और गैर-कानूनी उद्धारक शब्द है "पुनर्जन्म।" पुनर्जन्म का संबंध जीवन में आने से है। या जैसा कि जॉन 3 में है जहाँ आपको "फिर से जन्म लेना" है। यह वह जगह है जहाँ आप जीवित हो जाते हैं, आप अपने अपराधों और पापों में मरे हुए हैं लेकिन अब मसीह में आप पुनर्जीवित हो गए

हैं। आप मसीह में जीवित हो गए हैं। तो ये शब्द उद्धारक शब्दों के कुछ शब्द हैं।

यहाँ एक मोचन है। मोचन का मतलब है कि आपको वापस खरीद लिया गया है, अब आपको खरीदा गया है क्योंकि आपको छुड़ाया गया है। आप सभी शायद शॉर्शैंक रिडेम्पशन के बारे में सोचते होंगे। लेकिन, और यह बुरा नहीं है, लेकिन यह सिर्फ वापस लाए जाने का विचार है। आपको एक कीमत पर खरीदा जाता है। आपके पापों की कीमत क्या थी जिसके द्वारा आपको वापस लाया गया? जिस कीमत पर आपको वापस खरीदा गया वह यीशु मसीह का खून था। यीशु मसीह का खून हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है। यीशु मसीह का खून वह था जिससे आपको एक कीमत पर खरीदा गया था, मसीह की मृत्यु। इसलिए मोचन की धारणा है कि हम गुलाम थे और पाप के अधीन थे और अब हमें वापस खरीदा गया है। हमें यीशु मसीह के बहुमूल्य खून द्वारा छुड़ाया और वापस खरीदा गया है। तो यह मोचन की धारणा है।

प्रायश्चितः प्रायश्चित वह विचार है जो अपराधबोध और शर्म की धारणा के साथ काम करता है। दूसरे शब्दों में, जब कोई व्यक्ति पाप करता है, और कई बार आपने शायद अपने माता-पिता के साथ ऐसा किया होगा। मुझे याद है कि मैंने आप लोगों को यह कहानी पहले बताई थी, जब मैंने एक शर्त पर अपने पड़ोसी की खिड़की से एक पत्थर फेंका था, इस बच्चे ने मुझसे शर्त लगाई थी कि मैं इसे तीसरी मंजिल की खिड़की से नहीं फेंक सकता। मैंने एक आदमी की खिड़की से पत्थर फेंका और मुझे पता था कि जब मेरे पिता घर आएंगे तो वे मुझ पर बहुत गुस्सा होंगे और मुझे शर्म आ रही थी। मैं शर्मिंदा था और मैं डर गया था। इसलिए मैं जाकर छिप गया। तो यह उत्पत्ति 3 की तरह है जब आदम और हव्वा बगीचे में थे और उन्होंने भगवान के खिलाफ पाप किया। फिर वह बगीचे में आता है, वे उससे डरते हैं। अब और वे झाड़ियों में छिप जाते हैं। "तुम कहाँ हो आदम?" खैर, हम झाड़ियों में छिप रहे हैं अगर वे उससे बच सकते हैं। तो शर्म की यह धारणा और फिर ढकने की आवश्यकता। मुझे पता है कि जब मैंने खिड़की से पत्थर मारा था, तो मैं अपने बिस्तर में कूद गया था जब मेरे पिता घर आए और मेरे सिर पर कंबल खींच लिया, छिपने की कोशिश कर रहा था। तो शर्म और एक आवरण की आवश्यकता। तो जो आपके पास है वह आवरण है। आवरण कौन है? आवरण यीशु मसीह है इसलिए यीशु मसीह एक मेमने की तरह है। "हम सभी भेड़ों की तरह भटक

गए हैं। हमने हर किसी को अपने रास्ते पर ले जाया है और प्रभु ने हम सभी के अधर्म को उस पर डाल दिया है।" और इसलिए मसीह एक प्रतिस्थापन प्रायश्चित बन जाता है। हमारी शर्म और पाप से शर्म की धारणा को हटा दिया जाता है और मसीह पर रखा जाता है। इसलिए मसीह वह है जो क्रूस पर हमारी ओर से अपमान और शर्म को सहन करता है। जिसने हमारी ओर से शर्म और अपमान को सहन किया।

वैसे, क्रूस पर चढ़ना भी। बहुत बार हर कोई मसीह की मृत्यु और पीटने और पेड़ पर लटकाए जाने की क्रूरता पर ध्यान केंद्रित करता है। लेकिन मैं आपको बता दूँ कि बहुत बार हम शर्म की अवधारणा को भूल जाते हैं। रोमन क्रूस पर चढ़ने का एक हिस्सा व्यक्ति को शर्मिंदा करना था। और इसलिए उस शर्म ने फिर एक आवरण दिया और इसे ही प्रायश्चित कहा जाता है।

प्रायश्चित: हमने पहले इस बारे में बात की थी। भगवान पाप पर क्रोधित होते हैं। इसलिए भगवान पाप पर क्रोधित होते हैं। मुझे लगता है कि अगर आपने कभी कुछ किया है और आपके माता-पिता क्रोधित हो गए हैं। क्या आपने कभी कोई पाप किया है? आपने कुछ किया है, आपने कुछ चुराया है, आपने अपने माता-पिता से झूठ बोला है या ऐसा कुछ। आपके माता-पिता ने आपको पकड़ लिया। कभी-कभी आपके माता-पिता क्रोधित हो जाते हैं और कभी-कभी हम क्रोधित हो जाते हैं। क्रोध अन्याय के प्रति प्रतिक्रिया है।

अब अच्छा गुस्सा भी होता है और बुरा गुस्सा भी। आपको सावधान रहना होगा। हर गुस्सा बुरा नहीं होता। कभी-कभी गुस्सा होना अच्छा होता है पॉल कहते हैं, "क्रोध करो और पाप मत करो," इसलिए प्रायश्चित करना भगवान के क्रोध को शांत करना है। भगवान के क्रोध को शांत करना चाहिए। इसलिए, उदाहरण के लिए, मैं अपनी पत्नी के साथ क्लासिक उदाहरण का उपयोग करता हूँ। अगर मैं सुबह कुछ ऐसा कहता/करता हूँ जो वाकई बेवकूफी भरा है, मान लीजिए मैं उठा, मैंने अपने अंडों पर थोड़ा केचप लगाया या ऐसा कुछ और और मेरे हाथों पर केचप लगा। फिर मैं रेफ्रिजरेटर के दरवाजे पर गया और मैंने रेफ्रिजरेटर के दरवाजे पर केचप लगाया। मैं इसे पोंछने के बजाय वहीं छोड़ देता हूँ। मैं इसे वहीं छोड़ देता हूँ और मेरी पत्नी उठती है और दरवाजे या हैंडल पर केचप लगा होता है। वह देखती नहीं है, वह इसे पकड़ लेती है। अब उसके हाथ पर केचप

लगा है और वह चिढ़ गई है। मैंने इसे साफ नहीं किया या ऐसा कुछ नहीं किया। बेशक शादी में कई और चीजें होती हैं। तो अब मुझे पता है कि वह मुझ पर नाराज़ है। मैं उसका गुस्सा कैसे शांत करूँ। शायद मैं किराने की दुकान पर जाऊँ और उसके लिए कुछ फूल खरीदूँ और उसके गुस्से को शांत करने के लिए फूलों को घर ले जाऊँ। जैसा कि मैं अपने छात्रों को बताता हूँ कि फूल वाली चीज़ सिर्फ़ दो या तीन बार ही काम करती है और फिर आपको कुछ और करना पड़ता है। मैं फूलों के बाद चॉकलेट देने का सुझाव देता हूँ, लेकिन आप हर बार चॉकलेट नहीं दे सकते। वे सिर्फ़ दो या तीन बार के लिए ही अच्छे होते हैं। इसलिए आपको उसे खुश करने के तरीके बदलते रहना होगा। लेकिन मुझे भगवान के साथ इस बात को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

भगवान क्रोधित हो जाते हैं और इसलिए उन्हें संतुष्ट करने की आवश्यकता है। क्रोध को शांत करने की आवश्यकता है। यह यीशु मसीह के माध्यम से शांत होता है। प्रायश्चित्त का संबंध भगवान के क्रोध और भगवान के क्रोध को शांत करने से है।

प्रायश्चित्त का सम्बन्ध शुद्धिकरण से है। प्रायश्चित्त का सम्बन्ध शुद्धिकरण से है क्योंकि पाप को गंदा माना जाता है। पाप को गंदा माना जाता है और इसे शुद्ध करने की आवश्यकता है। व्यक्ति को शुद्ध करने की आवश्यकता है। इसलिए मुझे लगता है कि आप इसे ऐसे लोगों के साथ देख सकते हैं जो बड़े अपराध करने जा रहे हैं और वे अपने पापों को धोने की कोशिश में अपने हाथ धोते हैं। मैं ऐसे कमरों में रहा हूँ जहाँ वास्तव में पापपूर्ण चीजें चल रही हैं और जब मैं वहाँ से बाहर निकलता हूँ, तो मुझे लगता है कि मुझे स्नान करने की आवश्यकता है। मुझे इसे धोने की आवश्यकता है। इसलिए 1 यूहन्ना 2:1 में प्रायश्चित्त के बारे में बात की गई है। शुद्धिकरण की आवश्यकता है और यीशु का खून हमें सभी अधर्म से शुद्ध करता है।

मेलमिलाप एक और सुंदर अवधारणा है। पाप हमें परमेश्वर के शत्रु बनाता है, पाप हमें परमेश्वर के शत्रु बनाता है और इसलिए शत्रुओं को मेलमिलाप की आवश्यकता है। उन्हें फिर से एक साथ लाने की आवश्यकता है। तो इसका एक हिस्सा यह है कि हम परमेश्वर के शत्रु हैं। जब हम मसीह के लहू के द्वारा और स्वीकारोक्ति और पश्चाताप और विश्वास के द्वारा पाप करते हैं तो हम परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लेते हैं।

डॉ. डार्को और मैंने अभी कुछ समय पहले ही क्षमा और सुलह के बारे में चर्चा की थी। वह बता रहे थे कि कैसे क्षमा और सुलह दो अलग-अलग चीजें हैं। क्या यह संभव है कि मेरी पत्नी मुझे किसी बात के लिए माफ़ कर दे लेकिन सुलह न करे? क्या यह संभव है कि माफ़ कर दिया जाए लेकिन सुलह न हो? सुलह का मतलब है कि दो दुश्मन अब फिर से दोस्त बन जाते हैं। इसलिए एक व्यक्ति माफ़ तो कर सकता है लेकिन सुलह नहीं कर सकता। तो यह एक और कदम है जहाँ हम भगवान के दुश्मन बन जाते हैं। भगवान हमें अपने बच्चों और अपने दोस्तों के रूप में वापस जोड़ता है।

गोद लेना: यहाँ एक और सुंदर शब्द है। अब हम ईश्वर की संतान कहलाने में सक्षम हैं। ईश्वर हमारे पिता हैं। हम उन्हें अब्बा, पिता या डैडी कह सकते हैं। हमें एक डैडी मिला है। वह डैडी नहीं जो हमें धरती पर मिला था जिसने शायद हमें निराश किया हो और उसने हमारे साथ बहुत बुरा किया हो। नहीं, अब हमें एक स्वर्गीय पिता मिला है जो हमें हमारी कल्पना से भी परे जानता है और प्यार करता है। इसलिए हम गोद लिए गए हैं। हमें ईश्वर की संतान कहा जाता है। इसलिए इसे गोद लेना कहा जाता है। हम इस दुनिया के समुदाय के सदस्य थे और अब हमें ईश्वर की संतान बनने के लिए गोद लिया गया है।

तो ये, ये मोक्ष की शर्तें हैं और पाप का जवाब देने के अलग-अलग तरीके हैं। यीशु मसीह का खून, उनकी मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान और विश्वास के माध्यम से इसमें हमारी भागीदारी और अनुग्रह के माध्यम से निमंत्रण और केवल ईश्वर की कृपा से। यह एक खूबसूरत चीज़ है। तो मोक्ष इन सभी अलग-अलग पहलुओं को लेता है। रोमियों में ईश्वर के साथ दुश्मन बनने, मेल-मिलाप करने, न्यायसंगत होने, छुड़ाए जाने, मसीह और ईश्वर के परिवार में गोद लिए जाने के इन अलग-अलग पहलुओं को दिखाया जाएगा। तो ये खूबसूरत चीज़ें हैं। आप कहाँ के हैं? आप कहाँ के हैं, चाहे जो भी हो और यही हमेशा के लिए रहने के लिए सबसे बड़ा परिवार है। तो हम यहीं रुकेंगे और वीडियो देखने में भाग लेने के लिए आपका धन्यवाद और आपको शुभकामनाएँ।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा नए नियम के इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 23 रोमियों भाग एक है।